॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम्॥

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
प्रधान
श्री मनोहर लाल सरदाना

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी
संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार
सह संपादक
आचार्य ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्‌दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

पंजीकरण संख्या : UPMUL/2016/76974

घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
Date of Dispatch 12&13 Every Month

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ

1.	संपादकीय : दीपावली पर्व की...	2
2.	अच्छे संस्कारों की जरूरत	3
3.	अग्ने नय सुपथा...	4-5
4.	महर्षि दयानन्द सरस्वती...	6
5.	यज्ञ द्वारा समस्त रोगों का उपचार	7
6.	ओ३म् : हमारे जन्म का कारण...	8-9
7.	देश से हटे कुप्रथाएं और...	10
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	आर्य समाजवाद और भाग्यवाद	14-15
10.	प्रतीत होते पथ से फिसलते	21
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : रोगों से बचना है तो...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734
9899349304

Web : www.noidaaryasamaj.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

दीपावली पर्व की वैज्ञानिकता

भारत वर्ष पर्वों का देश है, यूं तो हम भारतीय नित्य प्रतिदिन किसी न किसी पर्व या त्योहार में सम्मिलित हैं। किंतु फिर भी कुछ प्रमुख पर्व हमारे यहां मनाये जाते हैं जैसे- श्रावणी, विजयदशमी तथा दीपावली आदि। प्रत्येक पर्व जीवन में आनंद एवं प्रेरणा से सम्बद्ध है। इन पर्वों को हम वर्ण व्यवस्था से जुड़ा हुआ जान सकते हैं। श्रावणी को स्वाध्याय से सम्बद्ध होने के कारण पठन-पाठन व्यवस्था के कारण ब्राह्मण वर्ण से तथा विजयदशमी को क्षत्रियों की क्षत्रधर्मों से, दीपावली को अन्न, कृषि, वाणिज्य आदि से सम्बद्ध होने से वैश्यों का पर्व माना जाता है। किंतु आज कोई भी व्यवसाय किसी भी वर्ण विशेष से सम्बद्ध न होने से सभी के हो गये हैं। अत: सभी भारतीय सभी पर्वों को अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक मनाते हैं। दीपावली अर्थात् दीपों की अवलि या पंक्ति जिसे शारदीय नव संस्येष्टि के नाम से भी आर्यों के द्वारा मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह रात्रि अत्यधिक गहन अंधकार से व्याप्त रहती है-

लिम्पतीव तमोङ्गनि वर्षतीवाञ्जनं नभः। असतपुरुषसेसेव दृष्टिर्विफलनां गता॥

किंतु यह पर्व दीयों का उत्सव होने के कारण हमें अंधकार से प्रकाश की ओर प्रवृत्त करता है। हमें अशुद्ध आचरण से सदाचरण का पवित्र संदेश प्रदान करता है। तमसो मा ज्योतिर्गमय की दृष्टि इससे मिलती है।

वैज्ञानिकता : शरद ऋतु की समाप्ति में कुछ ही दिन शेष हैं, इसके बाद हेमन्त ऋतु का साम्राज्य होगा। वर्षा के बीतने तथा शीत ऋतु के लिए कुछ विशेष तैयारियों की आवश्यकता होती है। वर्षा ऋतु में वृष्टि बाहुल्य से घर एवं वायुमंडल दूषित हो जाता है, जिसके शोधन के लिए गृह शुद्धि आवश्यक होती है, जिस हेतु लिपाई-पुताई, यज्ञ एवं दीपों के द्वारा पर्यावरण को शुद्ध किया जाता है। इसी समय सावनी की फसल का आगमन होता है, जिसमें कृषक के हर्ष की सीमा नहीं रहती, उसका घर अन्न, धान, तिल आदि का आगमन होता है, इस विषय में पारस्कर ग्रह्सूत्र, गोकिलीय ग्रह्सूत्र आदि तथा मनुस्मृति आदि में- 'सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या तथर्त्वन्ते द्विजोउर्ध्वरैः।' अर्थात् यज्ञ द्वारा शारदीय नवसस्येष्टि एवं दर्शेष्टि से यज्ञ करना चाहिए। किंतु इस दीपमाला की महारात्रि का महत्व एक घटना ने और भी बढ़ा दिया। इसी सायंकाल विक्रमी सं.-1940 तद्नुसार 30 अक्टूबर सन् 1883 ई. मंगलवार को वीर विक्रम की बीसवीं शताब्दी को अद्वितीय वेदोद्धारक आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी उच्च आत्मा को इस नश्वर शरीर से वियुक्त करके जगज्जननी के क्रोड का आश्रयन करके आनंद को प्राप्त किया। प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो। महापुरुष दयानन्द के अंतिम शब्द यही थे। जिस कारण इस पर्व ने आर्यों के लिए कार्तिक अमावस्या की रात्रि को और भी गहन बना दिया है। आइए हम भी दयानन्द जी के पद्चिह्नों पर चलते हुए मार्गदर्शन प्राप्त करें एवं गीता के इन्हीं भावों को चरितार्थ करें- **यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तदतदेवेतरो जन, सः यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।** (गीता) दीपावली के इस पर्व पर हम सभी अंधकार से प्रकाश की ओर प्रवृत्त हों यही परमप्रभु से प्रार्थना है। इति शम्!!

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

वर्षा ऋतु में वृष्टि बाहुल्य से घर एवं वायुमंडल दूषित हो जाता है, जिसके शोधन के लिए गृह शुद्धि आवश्यक होती है, इसी समय सावनी की फसल का आगमन होता है, जिसमें कृषक के हर्ष की सीमा नहीं रहती, उसका घर अन्न, धान, तिल आदि का आगमन होती है, यज्ञ द्वारा शारदीय नवसस्येष्टि एवं दर्शेष्टि से यज्ञ करना चाहिए। कितु इस दीपमाला की महारात्रि का महत्व एक घटना ने और भी बढ़ा दिया। इसी सायंकाल विक्रमी सं.-1940 तद्नुसार 30 अक्टूबर सन् 1883 ई. मंगलवार को वीर विक्रम की बीसवीं शताब्दी को अद्वितीय वेदोद्धारक आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपनी उच्च आत्मा को इस नश्वर शरीर से वियुक्त करके जगज्जननी के क्रोड का आश्रयन करके आनंद को प्राप्त किया। प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो। महापुरुष दयानन्द के अंतिम शब्द यही थे। जिस कारण यह पर्व आर्यों के लिए कार्तिक अमावस्या की रात्रि को और भी गहन बना दिया है। आइए हम भी दयानन्द जी के पद्चिह्नों पर चलते हुए मार्गदर्शन प्राप्त करें एवं गीता के इन्हीं भावों को चरितार्थ करें- यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तदतदेवेतरो जन, सः यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते। (गीता) दीपावली के इस पर्व पर हम सभी अंधकार से प्रकाश की ओर प्रवृत्त हों यही परमप्रभु से प्रार्थना है। इति शम्!!

अच्छे संस्कारों की जरूरत

आज भारत विकासशील देशों में गिना जाता है। परंतु खेद है कि साथ स्वीकार भी करना पड़ता है कि हमारा देश सामाजिक बुराइयों को लेकर एक शर्मनाक स्तर पर दिखाई देता है। नगरों और उपनगरों में शिक्षा के स्तर को 80 प्रतिशत मानकर हम गर्व करते हैं। गांवों में भले ही शिक्षा का स्तर कुछ कम हो, परंतु बुराइयों की ओर यदि रुख करें तो कन्याभ्रूण हत्या और ड्रग्स के नशे व शराब के सेवन से जकड़ी हुई हमारी सूझबूझ में बड़ी गिरावट दिखाई दे रही है।

पहले माना जाता था कि शिक्षा के अभाव में गांवों में सुधार की संभावनाएं कम है, परंतु वर्तमान में गांव हो या शहर हमारे मस्तक को शर्म से झुका देने वाले कृत्य देखने को मिलते हैं। जहां कन्या को घर-घर देवी की तरह पूजा जाता हो, उसी कन्या को जन्म से पहले ही मौत के घाट उतार दिया जाना क्या राक्षसी कृत्य से कुछ कम है? ऐसी सोच रखने वाले अपने पुत्र के लिए संस्कारित परिवार से वधू की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं? खेद है कि फिर भी लोग भ्रूण हत्या के पाप में भागीदार बनने से नहीं चूक रहे।

दूसरी ओर देखें तो 13-14 साल के किशोरों में ड्रग्स नशा, शराबखोरी की आदत ने परिवारों को झकझोर कर रख दिया है। अब तक बड़ी उम्र के लोगों में यह बुराई देखने को मिलती थी, परंतु अब तो यह स्कूल स्तर से शुरू हो जाती है और अब तो इसे रहन-सहन के स्तर में गिना जाने लगा है। बड़े-बुजुर्ग भी इसे रोक पाने में सक्षम नहीं दिखाई देते। ऐसे परिवारों की कमी नहीं जिनमें इसी कारण मारपीट भी होती है और कहीं-कहीं तो इस आदत के पीछे कर्ज की मार भी झेलनी पड़ती है।

इन बुराइयों का देखते हुए सारे समाज को जागरूक होना पड़ेगा और एक अच्छे खासे आंदोलन का रूप देने के लिए जनता को तैयार करना होगा। आर्यसमाज इन बुराईयों के लिए सदा ही लड़ता रहा है।

विश्वगुरु कहे जाने वाले हमारे भारत का क्या हो गया यदि जान लें तो बेहतर होगा। विदेशी महिलाओं से भी छेड़छाड़, नाबालिग बच्चियों से बलात्कार और आये दिन होने वाले भ्रष्टाचार, घोटालों के समाचारों से हमारा हृदय तार-तार हो जाता है।

हमें सोचना होगा, गम्भीर ऑपरेशन की आवश्यकता है। हममें से हर किसी को बलिदानी चोला पहनना होगा ताकि स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान व्यर्थ न जाये। यदि जन्म से ही संस्कार बच्चों में डाले जाएं तो कई बुराइयों को कम किया जा सकता है। संस्कारों की आज बहुत कमी है, स्कूलों में संस्कार नहीं दिये जाते।

मर्यादापुरुषोत्तम राम, योगीराज कृष्ण, स्वामी दयानन्द, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, शहीद भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, सुभाष चंद्र बोस, चंद्रशेखर आजाद व कई अन्य महापुरुषों को बचपन से ही उनके माता-पिता द्वारा अच्छे संस्कार दिये जाने से ही वह उच्चकोटि के मानव बने व संसार के उपकार के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। मार्डन बनने की होड़ में हमने अपनी संस्कृति को खो दिया है, जिससे आज का युवा पथभ्रष्ट हो रहा है। बड़ों को सम्मान नहीं, विदेशी चकाचौंध में कुछ नजर नहीं आता, सिवाय फूहड़ डांस, नाच-गाने, नंगापन, विदेशी संस्कृति, शराब नशाखोरी से आज के युवा को सुधारने की आवश्यकता है, जो अच्छे संस्कारों से ही सुधर सकते हैं। जिन्हें आत्मा से ही माता-पिता द्वारा संतानों को दिए जाने की नितांत आवश्यकता है।

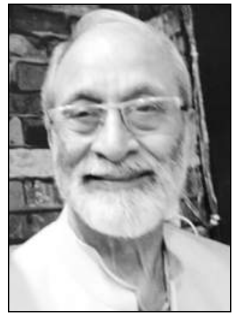

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

संस्कार का तात्पर्य हृदय से शिष्ट आचरण करना सिखाना है। दिखावे या कृत्रिमता का संस्कार में तनिक भी स्थान नहीं है। बच्चों को अच्छे संस्कार अर्थात् माता-पिता को नमस्ते करना, सभी व्यक्तियों के साथ विनम्रता का व्यवहार करना, किसी की भावनाओं को ठेस न पहुंचाना, छोटे बड़े का लिहाज करना तथा हर तरह से मर्यादित आचरण करना इत्यादि बताएं। बच्चों को अच्छे संस्कार और शिष्टाचार कब और कैसे दे- आजकल के बच्चे एक अच्छा इंसान बनने के बजाय संस्कारहीन बनते जा रहे हैं। माता-पिता भी अपने बच्चे के ऐशो-आराम और उच्च शिक्षा पर जितना समय और धन खर्च करते है उनता संस्कारों के लिए नहीं। नतीजतन बच्चे चोरी, डकैती, लूटपाट, आगजनी, ड्रग्स सेवन, मद्यपान, धूम्रपान आदि गंदी आदतों का शिकार हो जा रहे है जो पूरे समाज के लिए हानिकारक है।

अग्ने नय सुपथा

इस अंक से ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के आठवें मंत्र की व्याख्या प्रस्तुत की जा रही है, मनन चिन्तन कर जीवन सफल करें।

- प्रबंध संपादक

(गतांक से आगे...)

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

आचार्य यम अपने शिष्य नचिकेता को समझा रहे हैं- **अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयस्ते उभे नानार्थे पुरुषं सिनीतः। तयोः श्रेय आददानस्यसाद्यु भवति हीयतेऽर्थाद्य उ प्रयोवृणीते।। श्रेयश्चप्रयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः। श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दोयोगक्षेमाद् वृणीते।।**

भाव हुआ- श्रेय और वस्तु है और प्रेय अलग ही चीज है। श्रेय और प्रेय दोनों (पुरुषं सिनीतः) मनुष्य को बंधन में डालते हैं। श्रेय कल्याण करता है (साधु भवति) और प्रेय हानि करता है (हीयते अर्थात्)। श्रेय और प्रेय दोनों मनुष्य को प्राप्त होते हैं। धीर व्यक्ति अच्छी तरह विचार करके श्रेय को ग्रहण करता है और मंद व्यक्ति प्रेय को ग्रहण करता है।

प्रेय प्रिय है, श्रेय भी क्या अप्रिय है? श्रेय के लिए प्राय: तप और परिश्रम करना पड़ता है किंतु उस समय उसका प्रियता से विरोध नहीं होता। परोपकार, स्वदेशभक्ति, आदर्शों के लिए त्याग बलिदान, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, प्राणायाम सभी श्रेय हैं किंतु प्रेय विरोधी तो नहीं है। सभी सुपथ के साधक हैं। सुपथ सदा प्रियता विरोधी नहीं होता। बुद्धिमान विद्यार्थी को गणित, दर्शन, विषय की जटिलताएं आनंद देती हैं प्रिय हैं।

श्रेय बहुत बार प्रिय होता है, हां यह और बात है कि हर प्रेय श्रेयस्कर नहीं हो सकता। सिनेमा-नाच-जुआ सब प्रिय लग सकता है किंतु यह न श्रेय है और न सुपथ। कुपथ भी मनुष्य को अप्रिय लग सकता है। शराब पीने वालों का गला जलता है। जर्दा तम्बाकू खाने वालों के मुंह का स्वाद बिगड़ जाता है। कभी-कभी कय भी हो जाती है। सिगरेट सिगार पीने वाले भी शुरू में कष्ट पाते हैं। जुआरी भी हारने पर कष्ट पाता है। सो कुपथ सदा प्रिय नहीं होता। इस तरह सुपथ भी प्रिय होता है और कुपथ भी अप्रिय होता है, किंतु-

इन्द्रिय दोषात् संस्कार दोषाच्चाविद्या, प्रवृत्ति दोषात् संगदोषाच्च।। वैशे. 9-2-10

कुमार्ग में प्रवृत्त होने में कभी इंद्रियां दोष का कारण होती हैं तो कभी जन्म जन्मांतर के संस्कार, कभी मनुष्य की प्रवृत्ति और कभी साथियों की संगत कुपथ की ओर ले चलते हैं। अत: सच्चाई के साथ प्रार्थना करें 'हे प्रभो! अग्ने सुपथा नय।'

ले चल वहां भुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे-धीरे
श्रम-विश्राम क्षितिज बेला से
जहां सृजन करते मेला से
अमर जागरण ऊषा नयन से
बिखराती हो ज्योति घनी रे।

हम तो केवल इतना कहना चाहते हैं-

ले चल हमें भुलावा देकर
मेरे नाविक धीरे-धीरे
सत्पथ सुपथ हमारा पथ हो
जीवन का प्रभु! मंगल पथ हो।

हे अग्ने प्रभो! दुराहे, तिराहे, चौराहे कितने आते हैं, भ्रमित करते हैं। हम हैं अल्पदृष्टि, अल्पज्ञ, हम क्या जाने किस मार्ग की अंतिम परिणति कहां होगी? प्रभो आप मार्ग दर्शन करें- अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में, इस पार तुम्हारे हाथों

धीर व्यक्ति अच्छी तरह विचार करके श्रेय को ग्रहण करता है और मंद व्यक्ति प्रेय को ग्रहण करता है। प्रेय प्रिय है, श्रेय भी क्या अप्रिय है? श्रेय के लिए प्रायः तप और परिश्रम करना पड़ता है कितु सब समय उसका प्रियता से विरोध नहीं होता। परोपकार, स्वदेशभक्ति, आदर्शों के लिए त्याग बलिदान, ब्रह्मचर्य व्यायाम प्राणायाम सभी श्रेय हैं कितु प्रेय विरोधी तो नहीं है। सभी सुपथ के साधक हैं। सुपथ सदा प्रियता विरोधी नहीं होता। बुद्धिमान विद्यार्थी को गणित, दर्शन, विषय की जटिलताएं आनंद देती हैं प्रिय हैं। श्रेय बहुत बार प्रिय होता है, हां यह और बात है कि हर प्रेय श्रेयस्कर नहीं हो सकता। सिनेमा-नाच-जुआ सब प्रिय लग सकता है कितु यह न श्रेय है और न सुपथ। कुपथ भी मनुष्य को अप्रिय लग सकता है। शराब पीने वालों का गला जलता है। जर्दा तम्बाकू खाने वालों के मुंह का स्वाद बिगड़ जाता है। कभी-कभी कय भी हो जाती है। सिगरेट सिगार पीने वाले भी शुरू में कष्ट पाते हैं। जुआरी भी हारने कर कष्ट पाता है। सो कुपथ सदा प्रिय नहीं होता। कुमार्ग में प्रवृत्त होने में कभी इंद्रियां दोष का कारण होती हैं तो कभी जन्म जन्मांतर के संस्कार, कभी मनुष्य की प्रवृत्ति और कभी साथियों की संगत कुपथ की ओर ले चलते हैं।

में, उस पार तुम्हारे हाथों में।

अग्ने अस्मान् राये नय - प्रभो हमें विज्ञान और राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सुपथ से ले चलिए।

विद्वान् त्वं विश्वानि वयुनानि नय - आप विद्वान् हैं, सम्पूर्ण विद्या युक्त हैं, सो हमें सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइए। विज्ञान और राज्यादि ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए उत्तम कर्म प्राप्त करना अनिवार्य है। ऐश्वर्यों में पुत्र-पौत्र, धन-धान्य, सुनाम- प्रतिष्ठा, सम्पत्ति आदि सभी सम्मिलित हो जाते हैं। महान् ऐश्वर्य तो प्रज्ञान और उत्तम कर्म हैं। ज्ञान-विज्ञान-प्रज्ञान उत्तम कर्मों के दर्शक साधक हैं। कर्म-आचरण-व्यवहार-जीवनधारा, ये सब उन्नत न हो सके तो सारी विद्या, पंडिताई व्यर्थ ही हो गई। कठोर सत्य है- 'आचारहीन पुनन्ति वेदाः' आचारहीन व्यक्ति को तो वेद भी पवित्र नहीं कर सकते। किंतु ज्ञान-हीन, विद्याविहीन पुरुष को तो उत्तम कर्म, सदाचार, सद् आचरण का बोध भी न हो सकेगा। अतः सर्वप्रथम ज्ञान-प्रज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं। ज्ञान प्राप्त करने की भी शर्त है, चेष्टा है। निरुक्त में आचार्य यास्क ने ज्ञान प्राप्ति, विद्यादान की शर्तों का बड़ा हृदयग्राही प्रसंग उपस्थित किया है-

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मां शेवधिष्टेऽहमस्मि। असूयकायानृजवेऽयताय न मा ब्रूया वीर्यवती यथा स्याम्।। यमेव विद्याः शुचिमप्रमत्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपपन्नम। यस्ते न द्रुहोत्कतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रहान्।।

भाव यह है कि विद्या आचार्य ब्राह्मण के पास उपस्थित होकर कहता है- हे ब्राह्मण देवता! मैं तेरा खजाना हूं, कल्याणकारी खजाना हूं, सो देवता! मेरी रक्षा करो। कैसे विद्या की रक्षा हो? विद्या स्वयं यह कहती है- असूयक-निंदक, कुटिल, असंयमी अजितेन्द्रिय को विद्यादान मत करो ताकि मैं वीरता (वीरस्य भावः वीर्यम्) तेजस्विता से सम्पन्न बनी रहूं।

हे आचार्य देव! जो पवित्र हो, अप्रमादी-सावधान, बुद्धिमान, संयमी ब्रह्मचर्य से युक्त हो और जो आचार्य से द्रोह न करता हो, उसे विद्यादान कीजिए, वह शिष्य आपके कल्याणकारी खजाने की रक्षा करेगा।

हम जगदीश्वर से प्रज्ञान-विज्ञान की प्रार्थना करें तो हमें प्रज्ञान-पात्र बनने की चेष्टा करनी चाहिए। हम विद्या-ज्ञान ग्रहण करना चाहते हैं तो हमें त्याग देना चाहिए- निंदा, कुटिलता, असंयम और गुरुद्रोह। अपना लेना चाहिए- जीवन की पवित्रता, सावधानी, मेधा, संयम-ब्रह्मचर्य। तभी हम प्रज्ञान की प्रार्थना करने के अधिकारी बन पाते हैं।

हमारी प्रार्थना है कि प्रभो! हमें प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइए। हम प्रज्ञान और उत्तम कर्म के बिना राज्यादि ऐश्वर्य नहीं प्राप्त कर सकते। प्राप्त भी कर लेंगे तो ये राज्य, ये धन-ऐश्वर्य हमारे लिए सुखकारी नहीं होंगे। भीष्म-द्रोण आदि वृद्ध कौरवों ने दुर्योधन को आधा राज्य देकर हस्तिनापुर में और युधिष्ठिर को इंद्रप्रस्थ में बैठा दिया। दुर्योधन ईर्ष्यालु था और शकुनी, कर्ण आदि उसको मंत्रणा देने वाले भी ईर्ष्यालु थे। विद्या तो चाहे थी भी, किंतु उत्तम कर्म न थे। सो राज्यलक्ष्मी आकर ऐश्वर्य नहीं, विनाश का कारण बनी। आचार्य चाणक्य के दो चार सूत्र ध्यान में उतर रहे हैं- सुखस्य मूलं धर्मः- सुख का मूल धर्म है। धर्मस्य मूलं अर्थः- धर्म का मूल अर्थ है। अर्थस्य मूलं राज्यम्- अर्थ का मूल राज्य है। राजस्य मूलं इंद्रियजयः- राज्य का मूल इंद्रिय जय है। यह इंद्रिय जय ही तो उत्तम कर्मों का अधिष्ठान है। जितेन्द्रिय व्यक्ति तो कभी कुकर्मी हो ही नहीं सकता। राज्यश्री, लक्ष्मी, धन-ऐश्वर्य भी तो सुपात्र-उत्तम कर्म करने वालों का वरण करते हैं-

उत्साह सम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्। शूरं कृतज्ञं दृढ़ सौहृदं च, लक्ष्मी समायाति निवास हेतोः।।

ऐश्वर्य, राज्य, लक्ष्मी आदि उसे प्राप्त होते हैं जिसमें निम्नलिखित विशेषताएं हो- उत्साह सम्पन्न, कभी हतोत्साह न हो, दीर्घसूत्री न हो, किसी काम में आवश्यकता से अधिक समय न लगाना, काम करने की विधि का जानकार हो, व्यसनों में कभी आसक्त न हो, शूर हो, कृतज्ञ हो, दृढ़ मित्रता वाला हो। ऐसे व्यक्ति के आश्रय में लक्ष्मी निवास करती है। यह उत्तम कर्मों की एक अच्छी सूची बन जाती है।

युयोधि अस्मत् जुहुराणम् एनः- हमसे कुटिलता युक्त पापरूप कर्म दूर कीजिए। युयोधि का अर्थ है 'पृथक कीजिए' (युधि पृथक्करणे) एनः= पाप, जुहुराणम्- कुटिलता से युक्त (हुर्छा कौटिल्ये गतौ) सो सम्पूर्ण खंड का अर्थ है 'हे प्रभो! हमें कुटिलता युक्त पापरूप कर्मों से पृथक् कर दीजिए। सारे ही पाप कर्म कुटिलता से भरपूर होते हैं। ○○

सुधी पाठकों से आत्म निवेदन

कृपया अपने विचारों से हमें अवश्य अवगत करावें ताकि पत्रिका को और सुरुचिपूर्ण बनाया जाए।

■ प्रबंध संपादक : 9871798221, 7011279734

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती : उपदेश मंजरी

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यस :। –यजुर्वेद 32.3

अर्थ - उस ईश्वर की कोई मूर्ति अर्थात् प्रतिमा नहीं जिसका महान यश है

वेनस्त पश्यम् निहितम् गुहायाम –यजुर्वेद 32.8

अर्थ- विद्वान पुरुष ईश्वर को अपने ह्रदय में देखते है।

अंधतमः प्र विशन्ति ये सम्भूति मुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उसम्भूत्या-रताः।।

–यजुर्वेद 40.9

अर्थ- जो लोग ईश्वर के स्थान पर जड़ प्रकृति या उससे बनी मूर्तियों की पूजा उपासना करते हैं वह लोग घोर अंधकार (दुख) को प्राप्त होते हैं ।

प्रश्न- प्रार्थना क्यों करनी चाहिए, ईश्वर सर्वज्ञ है और सर्व शक्तिमान् भी है तो उसे हमारे मन की बात विदित है और उसने हमें इस प्रकार कैसे उत्पन्न किया कि हम पाप करें, फिर इस प्रकार की पाप–विषयिणी प्रवृत्ति हममें रखकर भी हमारे पाप को दण्ड देता है, तो ईश्वर न्यायी कैसा ?

1. हमारे माता–पिता ईश्वर के बनाए हुए पदार्थ लेकर हमें पालते हैं तो भी वे हम पर बड़े उपकार करते हैं। इन उपकारों का स्मरण करना हमारा धर्म है, ऐसा हम स्वीकार करते हैं। फिर जब ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न की तो उसके असंख्य उपकारों को हमें अवश्य स्मरण करना चाहिए।
2. कृतज्ञता दिखलाने वालों का मन स्वत: प्रसन्न और शान्त होता है।
3. परमेश्वर की शरण जाने से आत्मा निर्मल होता है।
4. प्रार्थना से पश्चात्ताप होता है और आगे पाप–वासना का बल घटता जाता है।
5. सत्यता और प्रेम हममें दृढ़ होते हैं।
6. स्तुति अर्थात् यथार्थ वर्णन, ईश्वरस्तुति करने से अपनी प्रीति बढ़ती है क्योंकि ज्यों–ज्यों उसके गुण समझ में आते जाते हैं, त्यों–त्यों प्रीति अधिक दृढ़ होती जाती है। फिर भी यह है कि उपासना के द्वारा आत्मा में सुख का प्रादुर्भाव होता है। इस उपाय को छोड़ पापनाशन करने के लिए अन्य उपाय नहीं है। काशी जाने से हमारे पाप दूर होंगे यह समझ, अथवा तोबा करने से पाप छूटना, किंवा हमारे पाप का भार अमुक भद्र पुरुष लेकर सूली चढ़ गया इत्यादि अन्य लोगों की सारी समझ अप्रशस्त है अर्थात् भूल पर है। उपासना के द्वारा विवेक उत्पन्न होता है, विवेकी होने से क्षणिक (नाशवान)वस्तुओं से शोक और आनन्द ये दोनों नहीं होते। अब ईश्वर ने जीव को स्वतंत्र किया, इसलिए उससे पाप भी होता है, यदि उसे परतंत्र किया जाता तो वह केवल जड़ पदार्थवत् बना रहता। जीव के स्वातन्त्र्य से ब्रह्म की सर्वज्ञता में कोई बाधा नहीं आती, क्योंकि इन दोनों में परस्पर संबंध नहीं है। बच्चे को खुला छोड़ा जाय तो वह चोट लगा लेवेगा, यह सोच माता बालक को बांधे नहीं रखती। तो भी बालक दंगा, धूम, फसाद अवश्य करेगा, यह ज्ञान माता को रहता ही है। इस लौकिक उदाहरण पर से ब्रह्म की सर्वज्ञता से जीव के स्वातन्त्र्य में कुछ भी आपत्ति नहीं आती। ज्ञान के विषय में स्वतंत्रता उसकी है, उसी तरह आचरण के विषय में उससे दिए हुए सामर्थ्य की मर्यादा में स्वतंत्रता मनुष्य की है। यदि ऐसी स्वतंत्रता न होती तो जो सुखोपभोग आज हो रहा है वह न होता और जीव–सृष्टि की उत्पत्ति व्यर्थ हुई होती।

OO

- 1879 में महर्षि दयानंद सरस्वती बरेली आए तो उनके ईसाई मत पर दिए गए व्याख्यानों से क्रोधित होकर अंग्रेज कमिश्नर ने उन तक यह बात पहुंचाई कि उनके व्याख्यान बंद हो जाएंगे। अंग्रेज कमिश्नर की बात का उत्तर उन्होंने उसी दिन के व्याख्यान 'आत्मा के स्वरूप' में दिया। व्याख्यान में सत्य के बल का विषय आया। महर्षि ने कहा- लोग कहते हैं कि सत्य को प्रकट न करो, कलेक्टर क्रोधित होगा, कमिश्नर अप्रसन्न होगा, गवर्नर पीड़ा देगा। अरे! चक्रवर्ती राजा भी अप्रसन्न क्यों ना हो, हम तो सत्य ही कहेंगे। फिर एक श्लोक पढ़ कर बोले- यह शरीर तो अनित्य है, इसकी रक्षा में प्रवृत्त होकर अधर्म करना व्यर्थ है। इसे जिस मनुष्य का जी चाहे नष्ट कर दे। फिर चारों ओर तीक्ष्ण दृष्टि डालकर सिंहनाद करते हुए बोले- परंतु मुझे वह शूरवीर पुरुष दिखाओ जो मेरी आत्मा के नाश का दावा करे। जब तक ऐसा वीर पुरुष संसार में दिखाई नहीं देता तब तक मैं यह सोचने के लिए भी तैयार नहीं हूं कि मैं सत्य को दबाऊंगा या नहीं। महर्षि के यह शब्द सुनकर सारे हॉल में सन्नाटा छा गया था।
- महर्षि के शब्दों में सत्य और असत्य क्या है? जो-जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव और वेदों के अनुकूल हों वह-वह सत्य और जो उससे विरुद्ध असत्य है। जो-जो सृष्टि क्रम से अनुकूल वह-वह सत्य और जो-जो-सृष्टि क्रम से विरुद्ध है वह-वह सब असत्य है, जैसे कोई कहे कि बिना माता-पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ, ऐसा कथन सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से सर्वथा असत्य है।

-सत्यार्थ प्रकाश सम्मुल्लास-3

यज्ञ द्वारा समस्त रोगों का उपचार

■ वैद्य गजानन्द व्यास, आयुर्वेदाचार्य

वर्तमान युग में नाना प्रकार के नित्य नवीन प्राणघातक असाध्य रोगों का प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। इस प्रवाह से बचने के लिए संसार के वैज्ञानिकों द्वारा अथक परिश्रम किया जा रहा है, कुछेक रोगों से बचने के लिए सूचीवेध के आविष्कार हुए हैं, पर ये निर्दोष नहीं है, इनसे रूग्णों के शरीर पर विपरीत प्रभाव भी पड़ता देखा जाता है, यदि हम मुड़कर देखें तो ज्ञात होगा कि सृष्टि के आदि से लेकर अब तक हवन का प्रचार समस्त संसार में रह चुका है। भारत में वेदों, उपनिषदों, धर्मशास्त्रों व आयुर्वेद-शास्त्रों में स्थान-स्थान पर यज्ञ-चिकित्सा की महिमा का वर्णन मिलता है। कुछेक पाश्चात्य देशों के वैज्ञानिकों ने भी हवन-चिकित्सा के सिद्धांतों को स्वीकारा है। यवन देशों के तत्ववेत्ता प्र्यूयकी ने अग्नि को वायु-शोधक माना है। जापान, चीन में होम को धोम कहते हैं, वे भी मंदिरों में धूप जलाते हैं। पारसी लोगों के बारे में सभी जानते हैं कि ये अग्नि के उपासक हैं।

वर्तमान में हमारे देशवासियों की ऐसी मानसिकता बन गई है कि पाश्चात्य वैज्ञानिकों द्वारा जो कुछ भी भला-बुरा कहा जाता है उसे ही देववाणी समझ कर अंधानुकरण करने में अपनी भलाई समझ बैठे हैं। अत: कुछेक पाश्चात्य वैज्ञाकिों ने यज्ञ-चिकित्सा की सार्थकता समझते हुए अपने उद्‌गार प्रकट किये हैं। यथा 'विज्ञान का नियम है कि स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली होता है।' यज्ञ सामग्री अग्नि के स्पर्श से सूक्ष्मतक होकर हमारे शरीर में प्रविष्ठ कर रोगों के सूक्ष्म-कीटाणुओं को नष्ट करती है। फ्रांस के रसायनवेत्ता मि. त्रिले ने सिद्ध किया है कि लकड़ी जलाने से 'फार्मिक आल्डीहाईड' नामक गैस निकलती है। जो हर प्रकार के सूक्ष्म से सूक्ष्म कृमियों को नष्ट करती है। वर्तमान मे यह गैस बाजार में 'फार्मोलिन' नाम से विक्रय होती है, जो मकानों को कृमिहीन करने में काम आती है। मि. त्रिले ने यह भी सिद्ध किया कि शक्कर जलाने से जो गैस निकलती है वह भी सूक्ष्म से सूक्ष्म रोग के कीटाणुओं को नष्ट करने में काम आती है। प्रो. टाटलिट ने सिद्ध किया है कि मुनक्का, किशमिश आदि जलाने से आंतरिक ज्वर के कीटाणु आधे घंटे में ही नष्ट हो जाते हैं। प्रो. हेमक्रिम ने सिद्ध किया कपूर व घी जलाने से रोग के कृमि शीघ्र नष्ट होते हैं। जिन सिद्धांतों को लाखों वर्ष पूर्व हमारे पूज्य ऋषियों ने प्रतिपादित किया था वे ही आज भी पाश्चात्य विज्ञान से भी सत्य सिद्ध हो रहे हैं।

यज्ञ एक वैज्ञानिक कृत्य है, समस्त कार्य उसकी सम्मति से होना चाहिए जो इस विज्ञान को समझता है। अत: यज्ञ सामग्री द्वारा निकलने वाली गैस हमारे लिए नुकसान कारक नहीं है। अपितु अन्न फलादि की अधिक उत्पत्ति में भी सहायक है। गीता में, भगवान ने स्पष्ट किया है- सम्पूर्ण प्राणी अन्न से पैदा होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है और वृष्टि यज्ञ से होती है। कुछेक विद्वानों को यह भ्रांति हो रखी है कि कीटाणुवाद के प्रतिपादक पाश्चात्य वैज्ञानिक ही है, पर यह उनकी नासमझी है। अथर्ववेद, ऋग्वेद में सूक्ष्म कृमियों

का वर्णन किया गया है (अथर्व. 2.31.2)। इसी प्रकार क्षय रोगों के कीटाणुओं को नष्ट करने का वर्णन है- अ.का.3, सू.11 मं 1, का 3 सू. 11-मं 2.3.4, अ. का 7 सू. 76 मं. 3-4 आदि ऐसे ही चेचक, अपस्मार, कामला, उपदंश आदि अनेक रोगों के कीटाणुओं का वर्णन मिलता है। रोगों की कीटाणुओं को नष्ट करने के लिए यज्ञ-चिकित्सा ही सर्वश्रेष्ठ उपाय बतलाते हुए नित्य हवन करने पर जोर दिया गया है। यदि कोई शंका करे कि आयुर्वेद का आधार त्रिदोषज्ञ है तो फिर कीटाणुओं से इसका तादात्म्य कैसे? यूं तो ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में स्थान-स्थान पर कीटाणुओं से होने वाले रोगों का वर्णन मिलता है, जो अकाट्य व शाश्वत सत्य है। पर सामान्य ज्ञानानुसार वातादि धातुएं जिस किसी कारण से विकृत हों तो दोषज्ञ हो जाते हैं, ये ही दोष आगे जाकर पाचन क्रिया तो अनियमित कर कीटाणुओं की उत्पत्ति कराते हैं।

पदार्थ-विज्ञान का नियम है कि वस्तु का नितांत अभाव नहीं होता, केवल आकार परिवर्तित होता है। अत: यज्ञ-अग्नि में डाले गये पदार्थ नष्ट नहीं होते, बल्कि औषधियों के परमाणु सूक्ष्म हो, शक्तिशाली हो जाते हैं तथा वे सूक्ष्म परमाणु हमारे शरीर में श्वास द्वारा पहुंचकर अंगों को पुष्ट करते हैं तथा वहां स्थित कीटणुओं को नष्ट करते हैं जैसा कि वेद भगवान् ने बतलाया है। (अथर्व. 1.2.2)!!

ओ३म् : हमारे जन्म का कारण क्या है?

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

हर कार्य का कारण हुआ करता है। इसी प्रकार हमारे जन्म का भी कारण अवश्य ही कोई है। इस पर विचार करते हैं। हमें इस जन्म में मनुष्य जन्म मिला है। इस मनुष्य जन्म की विशेषता हमारा मानव शरीर है जिसमें पांच ज्ञान और पांच कर्म इन्द्रियां हैं। इन इन्द्रियों से हम देखते, सुनते, बोलते, रस का अनुभव करते तथा स्पर्श का अनुभव प्राप्त करते हैं तथा इन्द्रियों के नाना सुखों को भोगते हैं। पांच कर्मेन्द्रियों से हम कर्म करते हैं।

इन कर्मों को करने से ही हमें सुख व दु:ख की प्राप्ति होती है। यदि हम कर्म न करें तो हमारा जीवन रोगी होकर समाप्त हो सकता है। कर्म करना हमारे लिये आवश्यक है। इन कर्मों का परिणाम हमारे इस जन्म में भी सुख व दु:ख के रूप में सामने आता है। ऐसा हमारे प्रतिदिन के जीवन में होता है, जिसका हम अनुभव करते हैं। हम शिशु के रूप में उत्पन्न होते हैं और बढ़ते हुए किशोर व युवा होते हैं। 12 वर्ष के बाद हमारे ज्ञान व समझ में तेजी से वृद्धि होती है और संसार की बातों को अच्छी तरह से समझने लगते हैं। पुस्तक पढ़ने से हमें उस विषय का ज्ञान होता है। हम पुस्तक की बातों की सत्यता व असत्यता को भी जानने की क्षमता से युक्त होने आरम्भ हो जाते हैं। ज्ञान व अनुभव बढ़ने से हमारी सोच व समझ में वृद्धि होती जाती है। युवावस्था हमारे शरीर के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थिति होती है। इस स्थिति में हमारा ज्ञान व अनुभव परिपक्व होता है और हमें अपने हित व अहित तथा कर्तव्य व अकर्तव्यों का भी पूरा ज्ञान होता है। यह अवस्था कुछ वर्षों तक स्थिर रहती है। मनुष्य जीवन का यह समय ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का समय होता है। इस अवस्था में हम जो व जैसी साधना करते हैं उसको प्राप्त कर लेते हैं व कर सकते हैं। इसके बाद हमारी वृद्धावस्था का आरम्भ होता है जिसमें हमारे शरीर की शक्तियों में न्यूनता व क्षीणता आनी आरम्भ हो जाती है। लगभग 70-100 वर्ष के बीच आयु होने पर प्राय: सभी मनुष्यों की मृत्यु हो जाती है। इसके कुछ अपवाद भी हो सकते हैं। यह हम सबका जीवनचक्र है।

युवा व प्रौढ़ अवस्था में हमने बाल्यकाल और वृद्धावस्था की दृष्टि से प्राय: सबसे अधिक शुभ व अशुभ कर्म किये होते हैं। इन सब कर्मों का फल सुख व दु:ख हम इस जीवन में नहीं भोग सकते। कुछ मनुष्य अपनी वृद्धावस्था में नाना प्रकार के शुभ भी और अशुभ भी अनेक कर्म करते हैं। इन सबका फल इस जन्म में मिलना सम्भव नहीं होता। हमारे मनीषियों ने इस विषय पर गम्भीर चिन्तन कर बताया है कि मनुष्य जो कर्म करता है वह मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं। एक क्रियमाण कर्म होते हैं जिनका फल उसे कर्म करने के साथ-साथ या कुछ ही समय बाद मिल जाता है। कुछ

यदि हम कर्म न करें तो हमारा जीवन रोगी होकर समाप्त हो सकता है। कर्म करना हमारे लिये आवश्यक है। इन कर्मों का परिणाम हमारे इस जन्म में भी सुख व दु:ख के रूप में सामने आता है। ऐसा हमारे प्रतिदिन के जीवन में होता है, जिसका हम अनुभव करते हैं। हम शिशु के रूप में उत्पन्न होते हैं और बढ़ते हुए किशोर व युवा होते हैं। 12 वर्ष के बाद हमारे ज्ञान व समझ में तेजी से वृद्धि होती है और संसार की बातों को अच्छी तरह से समझने लगते हैं। पुस्तक पढ़ने से हमें उस विषय का ज्ञान होता है। हम पुस्तक की बातों की सत्यता व असत्यता को भी जानने की क्षमता से युक्त होने आरम्भ हो जाते हैं। ज्ञान व अनुभव बढ़ने से हमारी सोच व समझ में वृद्धि होती जाती है। युवावस्था हमारे शरीर के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थिति होती है। इस स्थिति में हमारा ज्ञान व अनुभव परिपक्व होता है और हमें अपने हित व अहित तथा कर्तव्य व अकर्तव्यों का भी पूरा ज्ञान होता है। यह अवस्था कुछ वर्षों तक स्थिर रहती है। मनुष्य जीवन का यह समय ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं अपने लक्ष्यों की प्राप्त करने का समय होता है। इस अवस्था में हम जो व जैसी साधना करते हैं उसको प्राप्त कर लेते हैं व कर सकते हैं।

कर्म संचित कर्म होते हैं जिनका फल इस जन्म में कालान्तर में मिलता है। कुछ संचित कर्म ऐसे होते हैं जिनका फल इस जन्म में नहीं मिल पाता। ऐसे कर्म ही हमारे पुनर्जन्म का कारण बनते हैं। इन्हीं कर्मों को प्रारब्ध कहा जाता है।

सृष्टि की उत्पत्ति पर विचार करने और वेद तथा ऋषियों के ग्रन्थों के प्रमाणों से यह सृष्टि ईश्वर द्वारा बनाई हुई रचना है। ईश्वर एक सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान तथा सभी प्राणियों के प्रत्येक कर्म की साक्षी सत्ता है। ईश्वर हमारा न्यायाधीश भी है। ईश्वर के इस गुण को वेदों में अर्यमा नाम से व्यक्त किया गया है। वह ईश्वर हमारे कर्मों का फल देने के लिये ही हमें नाना प्रकार के शरीर व भोग उपलब्ध कराता है।

हमारे पूर्वजन्मों के अवशिष्ट व भोग से बचे हुए कर्मों का भोग करने के लिये ही हमारा यह जन्म हुआ था। इस जन्म में हम पूर्वजन्मों के जितने कर्मों का भोग कर लेंगे वह हमारे प्रारब्ध से निकल जायेंगे। शेष बचे कर्मों सहित इस जन्म के संचित कर्मों के आधार पर हमारा परजन्म का प्रारब्ध बनेगा। यह प्रारब्ध ही हमारे भावी जन्म वा पुनर्जन्म का कारण होता है। यदि यह प्रारब्ध न होता तो हमारा जन्म भी न होता। प्रारब्ध, पूर्वजन्मों के उन कर्मों को कहते हैं जिनका भोग नहीं हुआ होता अथवा जिनका जीवात्मा को भोग करना होता है और परमात्मा को भोग कराना होता है। सिद्धान्त है कि ''अवश्यमेव ही भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।

इस आधार पर हमारे जन्म का रहस्य सुस्पष्ट हो जाता है। पूर्वजन्म के कर्म वा प्रारब्ध के अतिरिक्त हमारे इस जन्म का कोई कारण नहीं है और इस जन्म में मृत्यु होने पर बचे हुए कर्मों का भोग करने के लिये हमारा पुनर्जन्म होना भी तर्क व युक्तिसंगत है। यदि ऐसा नहीं होगा तो सृष्टि के सबसे बड़े न्यायाधीश, जो संसार के बड़े से बड़े न्यायाधीशों का भी न्यायाधीश और उनके कर्मों का भी न्याय करता है, उस पर आरोप आयेगा कि उसने जीवों के कर्मों का भोग प्रदान नहीं किया। अतः इससे संसार में विद्यमान ईश्वर द्वारा संचालित कर्म-फल व्यवस्था का भी ज्ञान होता है।

जन्म का कारण कर्म हैं, यह स्पष्ट होने पर एक शंका हो सकती है कि इस सृष्टि का आरम्भ कब से है? विचार करने और उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर यह सृष्टि अनादि सिद्ध होती है। इस सृष्टि का कभी आरम्भ नहीं हुआ है अपितु यह सदा से, अनादि काल से, उत्पन्न होती व इसकी प्रलय होती आ रही है। इस सिद्धान्त को 'सृष्टि प्रवाह से अनादि है' सिद्धान्त कहा जाता है। इसका कारण यह है कि ईश्वर, जीव व प्रकृति यह तीन सत्तायें अनादि सत्तायें हैं। इनका न तो आदि है और न कभी अंत होना है। अन्त उसी सत्ता का होता है जिसका आदि होता व जन्म होता है। जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु भी अवश्यम्भावी होती है और जिसका जन्म नहीं होता, उसकी मृत्यु भी नहीं होती।

गीता में कहा गया है 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य च' अर्थात् जिसका जन्म होता है उसकी मृत्यु होनी अटल है और जिसकी मृत्यु होगी उसका जन्म होना भी अटल व ध्रुव सत्य है। इसी सिद्धान्त के अनुरूप सृष्टि के प्रवाह से अनादि का सिद्धान्त है। जीवात्मायें अनादि सत्तायें हैं। इन जीवात्माओं का अनादि काल से संचित कर्म व प्रारब्ध चले आ रहे हैं। इसी कारण से ईश्वर को सृष्टि की रचना, पालन व प्रलय करनी पड़ती है। ऐसा ही हमेशा होता रहेगा क्योंकि ईश्वर, जीव तथा प्रकृति का अस्तित्व शाश्वत, सनातन, अनादि व नित्य है।

कर्म व प्रारब्ध को जानकर मनुष्य को दुखों से बचने के लिये अपने कर्मों को वेदानुकूल व वेदसम्मत बनाना चाहिये। वेद निषिद्ध कोई कर्म नहीं करना चाहिये और वेद प्रतिपादित किसी कर्म का त्याग भी नहीं करना चाहिये। कुछ कर्म सबके लिये आवश्यक एवं अनिवार्य हैं जिन्हें सभी मनुष्यों को करना चाहिये। इन कर्मों को नित्यकर्म व महायज्ञ कहते हैं।

प्रेरक वचन

- ईर्ष्या तथा द्वेष की प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं होती। अपने मन की शुद्धि, ज्ञान की प्राप्ति तथा शुभ कामनाओं के लिए परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिए।
- प्रार्थना के लिए समय नियत करना चाहिए और उसी समय प्रार्थना करनी चाहिए।
- प्रत्येक आर्यसमाजी को अपने घर में वेदों के ग्रंथ रखने चाहिए तथा वे आलमारियों में बंद न रहें, प्रत्युत उनका पाठ भी होना चाहिए।
- सत्संग के संबंध में हमारा यह विचार होना चाहिए कि हमारी संगति अच्छे से अच्छे व्यक्तियों के साथ हो।

देश से हटे कुप्रथाएं और बुरे विचार

ओमकार शास्त्री
संस्कृत प्रवक्ता, आर्ष गुरुकुल, नोएडा

हमारे भारत वर्ष का नाम आर्यावर्त्त था और इसमें निवास करने वाले लोग आर्य थे अर्थात् श्रेष्ठजन। आर्यावर्त्त के लोग वेद के सिद्धांत को मानने वाले थे। समस्त आर्यावर्त्त में वैदिक सिद्धांतों और वैदिक मान्यताओं का पालन होता था।

वर्तमान भारत वर्ष की हालत सिर्फ सिद्धांतों को भूल जाने और कुप्रथाओं में फंस जाने के कारण समाज और राष्ट्र का पतन हो रहा है। अनेकों धर्म और मतों ने भारत वर्ष को बर्बाद कर दिया है। अनेकों धर्मों और सम्प्रदायों के नाम पर देश के हालात खराब होते जा रहे हैं और समाज तथा राष्ट्र में अशांति फैल रही है। देश के आदर्श कहे जाने वाले लोग आज समाज को बांट रहे हैं।

अनेकों भ्रमित रास्तों पर धर्म के ठेकेदार बनकर आम जनमानस को पथभ्रष्ट कर रहे हैं। समाज में बढ़ रही गुरुड़म परम्परा देश के भविष्य के लिए खतरा है। इसलिए आज बुद्धिजीवी वर्ग को चिंतन करने की आवश्यकता है, नहीं तो देश का भविष्य बिगड़ सकता है, क्योंकि लोगों से ही अच्छे समाज का निर्माण होता है। और अच्छे समाज से उन्नत और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण होता है। वेद का मंत्र कहता है-

ओ३म् आ ब्रह्मन ब्राह्मणो ब्रह्मावर्चसी जाय तामा राष्ट्रे रान्जयः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धि र्योषा जिष्णु रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्यन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। यजु. 22/22

अर्थ : ब्रह्मन! स्वराष्ट्र में हो द्विज ब्रह्म-तेजधारी, क्षत्रिय महारथी हों अरिदल-विनाशकारी। होवें दुधारु गौएं पशु अश्व आशुवाही, आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही। बलवान् सभ्य योद्धा यजमान-पुत्र होवें, इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप धोवें। फल-फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी, हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी।

अर्थात् सम्पूर्ण राष्ट्र से कुरीतियांऔर कुप्रथाओं का अंत होगा तभी उन्नत और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। सबसे बड़ी समस्या अशिक्षा, जातिवाद, प्रांतवाद, भाषावाद, सम्प्रदाय, भ्रष्टाचार और राजनेताओं की भ्रष्ट राजनीति इस देश को बर्बाद कर रही है। हमारे देश के नेता अपने और अपने परिवार की चिंता करते हैं, उन्हें देश और राष्ट्र दिखाई ही नहीं देता।

समाज के हर व्यक्ति को इन सब बातों को समझना पड़ेगा और सभी कुरीतियों और कुप्रथाओं से ऊपर उठकर कार्य करना पड़ेगा तभी अच्छे विचार आयेंगे। बुरे विचार व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का विनाश कर देते हैं और समाज में अशांति फैल जाती है। इसलिए अच्छे विचारों को धारण करें और समृद्ध तथा श्रेष्ठ भारत वर्ष का निर्माण करें। यही सच्ची देश भक्ति है।

वैदिक सिद्धांत आखिर है क्या...?

इस वाक्य को सुनते ही लोग सोचने लगते हैं कि यह कोई नूतन परंपरा होगी। यह मात्र अनजानो की ही बात होगी क्योंकी जहां बात वैदिक सिद्धांत की हो तो वो नई पुरानी में उसे शामिल करना सरासर गलत ही है। क्योंकि आदि सृष्टि के सृजनकर्ता ने अपनी संतानों को यह नियम बनाकर दिया है जिसका नाम वैदिक है। वेद का अर्थ ज्ञान है। यह ज्ञान सर्वकालिक, सार्वभौमिक और सार्वदेशिक है। परमात्मा का संविधान अगर किसी ख़ास मुल्क वालों को संबोधन करे तो परमात्मा पर पक्षपात का दोष लगेगा। यह दोष जितनी भी मजहबी किताब हैं सब पर लगा। किताब को मज़हब के जन्म देने वालों द्वारा बनाया गया है, मानव मात्र के लिए-नहीं। यही कारण है की जितने भी मज़हबी किताब है वह किसी मज़हब वालों के लिए उपदेश है, वर्ग विशेष के लिये आदेश है, संप्रदाय के लिये संदेश है सम्पूर्ण मानवता के लिए नहीं। परन्तु वेद का उपदेश पूरी मानव जाती के लिये है। इसके अतिरिक्त जितने भी वाद हैं जैसे समाजवाद, पूंजीवाद, साम्यवाद, संप्रदायवाद व अनेक ईश्वरवाद यह सभी मानवकृत होने से सबके लिए होना अथवा बराबर होना संभव नहीं। वैदिक संस्कृति के जानने और मानने वालों का यह दृढ़ विश्वास है की सृष्टि के आदि से परमात्मा ने जो ज्ञान सम्पूर्ण मानव जाती को ऋषि-मुनि के द्वारा दिया है या निर्धारित किया है वही मार्ग या लक्ष्य संसार का कल्याण कर सकता है।

लोभः पापस्य कारणम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

लोके जनाः भवन्तोऽपि पापकर्माणि कुर्वन्ति, तेषां मूले लोभ एव भवति। सर्वेषामपराधानां मूलकारणं लोभः। धनस्य लुण्ठनं, दारापहरणं, जीवहत्या, आत्महत्या स्वजनविरोधश्च एतानि सर्वाण्यपि पापकर्माणि लोभादेव भवन्ति लोभात् बुद्धिभ्रंशो जायते, बुद्धिभ्रंशात् कुबुद्धिः संजायते, कुबुद्धिना च पापकर्म सम्भवति। उक्तं च–

लोभने बुद्धिश्चलति लोभो जनयते तृषाम्।
तृषार्तो दुःखमाप्नोति परत्रेह च मानवः॥

यद्यपि लोभात् यत्पापं नरः करोति, तेन क्षणमात्रं सुखमनुभवतिः,किन्तु अन्ते दारुणं दुःखमवाप्नोति। लोभात् तृप्तिः कदापि न भवति लोके। लोभोऽपि बहुविधः। यथा– धनलोभः, वनितालोभः, परद्रव्यलोभः इत्यादयः। एषु धनराजवैभवानां लोल एव प्रमुखः। अस्मात् लोभात् जना स्वदेशं परित्यज्य स्वबांधवान् अपि परित्यज्य विदेशे गत्वा येन केन प्रकारेण उचिताऽनुचिताविवेक रहितो धनस्य उपार्जनाय प्रयतन्ते। तथापि तेषां तृप्तिर्न भवति। लोभस्य महिमा विद्यते। अस्य प्रभावेन न कोऽपि लोके वन्चितः। मर्यादापुरुषोत्तमो रामः सर्वज्ञः सन् अपि सुवर्णमयस्य मायामृगस्य मोहे पतितः सन् तमन्यधावत्। रावणः स्वमृत्योः कारणभूतां सीतां ज्ञात्वापि लोभात् परवतः तां लंकामनयत्।

असम्भवं हेममृगस्य जन्म तथापि रामो लुलुभे मृगाय।
प्रायः समासन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिना भवंति॥

लोभप्रभावात् लोके युद्धं भवति। महाभारतस्य युद्धं अस्य लोभस्यैव परिणाम आसीत्। अभीप्सितपदार्थस्य दुर्लत्वात् क्रोधः भवति, क्रोधात् हिंसायाः भावना जागर्ति, यया भावनया प्रेरितो नरो जीवहत्यां करोति। लोभादेव कामः विषयानुरागः अपि सम्भवति। रूपमाधुर्यलोभादेव लम्पटः स्वस्त्री विहाय परकीयां सेवते, सन जानाति यत् या नारी स्वपतिं विहाय परपुरुषं सेवते, सा कुलटा कदापि साध्वी हितकारिणी न भवति। अतः त रूपमाधुर्यलम्पटतया वंचिताः दुःखसागरे निपतन्ति। यतो हि कामानामुपभोगेन विषयवासना कदापि न तृप्यति, अपि तु नित्यं वर्धत एव। अत एवोक्तं गीतायाम्–

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
लोभः क्रोधश्च मोहश्च तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥

यः कोऽपि एतान् त्रीन् दोषान् वारयितं समर्थः भवति, स लोके सर्वान् सुखानुपभुज्य परलोकेऽपि ब्रह्मसुखमनु भवति। एतेषु दोषेषु लोभ एव प्रधानः। लोभो दुर्जेयः स योगिनामपि मनांसि हरति। महर्षेः विश्वमित्रस्य मनः मेनकां दृष्ट्वा प्रचलितम्। सः योगपथात् भ्रष्टोऽभवत्। अतः यथार्थमेवोक्तं यत्–

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिर्धते॥ धनेषु जीवितव्येषु स्त्रीषु भोजनवृत्तिषु। अतृपता मानवाः सर्वे याता यास्यन्ति यान्ति च॥

अधुना लोके आर्थिकयुगं प्रवर्तते। सर्वेऽपिजना भोजनं गृहं वित्तं च कामयन्ते। परमार्थचिंता न कोऽपि कुरुते। परमार्थचिंतनं विना त्यागदिसद्गुणा लुप्यन्ते, येन सर्वत्र अधर्मस्य साम्राज्यं विनाशश्च भवति। सम्प्रति सर्वे जनाः अतृप्ता एव अस्मात् लोकात् मृत्युं प्राप्य यान्ति। भविष्येऽपि गमिष्यन्ति। यतो हि कालो ह्ययं निरवधिः विपुला च पृथ्वी। अतः साधु एवोक्तम्–

लोभात् क्रोधः प्रभवति लोभात् कामः प्रजायते।
लोभांमोहश्च नाशश्च लोभः पापस्य कारणम्॥ ○○

आर्योद्देश्यरत्नमाला

ईश्वर– जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनंत आदि सत्यगुण वाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनंदी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है। जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सर्व जीवों को पाए, पुण्य के फल ठीक-ठीक पहुंचाना है, उसको 'ईश्वर' कहते हैं।

धर्म– जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है। जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सुपरीक्षित और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए मानने योग्य है, उसको 'धर्म' कहते हैं।

अधर्म– जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा को छोड़कर और पक्षपात सहित अन्यायी होके विना परीक्षा करके अपना ही हित करना है। जिसमें अविद्या, हठ, अभिमान, क्रूरतादि दोषयुक्त होने के कारण वेद-विद्या से विरुद्ध है, इसलिये यह अधर्म सब मनुष्यों को छोड़ने के योग्य है, इससे यह 'अधर्म' कहाता है।

पं जवाहर लाल नेहरू

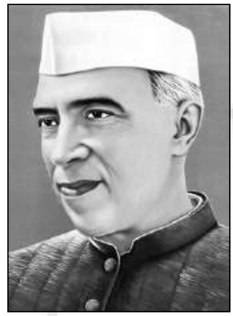

जन्म : 14 नवम्बर
शत्-शत् नमन

पं. जवाहरलाल नेहरू (नवंबर 14, 1889–मई 27, 1964) भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री थे और स्वतन्त्रता के पूर्व और पश्चात् की भारतीय राजनीति में केन्द्रीय व्यक्तित्व थे। महात्मा गांधी के संरक्षण में, वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सर्वोच्च नेता के रूप में उभरे और उन्होंने 1947 में भारत के एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापना से लेकर 1964 तक अपने निधन तक, भारत का शासन किया। वे आधुनिक भारतीय राष्ट्र-राज्य-एक सम्प्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, और लोकतांत्रिक गणतंत्र के वास्तुकार माने जाते हैं। कश्मीरी पंडित समुदाय के साथ उनके मूल की वजह से वे पंडित नेहरू भी बुलाए जाते थे, जबकि भारतीय बच्चे उन्हें चाचा नेहरू के रूप में जानते हैं। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का पद संभालने के लिए कांग्रेस द्वारा नेहरू निर्वाचित हुए, गांधीजी ने नेहरू को उनके राजनीतिक वारिस और उत्तराधिकारी के रूप में स्वीकार किया। प्रधानमंत्री के रूप में, वे भारत के सपने को साकार करने के लिए चल पड़े। भारत का संविधान 1950 में अधिनियमित हुआ, जिसके बाद उन्होंने आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सुधारों के एक महत्त्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की। विदेश नीति में, भारत को दक्षिण एशिया में एक क्षेत्रीय नायक के रूप में प्रदर्शित करते हुए, उन्होंने गैर-निरपेक्ष आंदोलन में एक अग्रणी भूमिका निभाई। भारत में उनका जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता हैं और बच्चों के वह चाचा नेहरू थे।

स्मृति : 15 नवम्बर
शत्-शत् नमन

महात्मा हंसराज : आर्यसमाज के नेता एवं शिक्षाविद

भारत में शिक्षा के प्रसार में डीएवी विद्यालयों का बहुत बड़ा योगदान है। विद्यालयों की इस श्रृंखला के संस्थापक हंसराज जी का जन्म महान संगीतकार बैजू बावरा के जन्म से प्रसिद्ध हुए ग्राम बैजवाड़ा, जिला होशियारपुर, पंजाब में 19 अप्रैल, 1864 को हुआ था। बचपन से ही शिक्षा के प्रति इनके मन में बहुत अनुराग था पर विद्यालय न होने के कारण हजारों बच्चे अनपढ़ रह जाते थे। वह शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत कुछ करना चाहते थे लेकिन उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और जिम्मेदारी उनके ऊपर ही थी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए भी उन्होंने 22 वर्ष की आयु में डीएवी स्कूल में प्रधानाचार्य के रूप में अवैतनिक सेवा आरंभ की जिसे वह 25 वर्षों तक करते रहे। महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त थे। लाला हंसराज अविभाजित भारत के पंजाब के आर्य समाज के एक प्रमुख नेता एवं शिक्षाविद् थे। पंजाब भर में दयानंद एंग्लो वैदिक विद्यालयों की स्थापना करने के कारण उनकी कीर्ती अमर है। देश, धर्म और आर्य समाज की सेवा करते हुए, 15 नवम्बर, 1936 को महात्मा हंसराज जी ने अंतिम सांस ली।

राजनेता स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय

बलिदान : 17 नवम्बर
शत्-शत् नमन

लाला लाजपत राय भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ने वाले मुख्य्य क्रांतिकारियों में से एक थे। वह पंजाब केसरी (पंजाब का शेर) के नाम से विख्यात थे और कांग्रेस के गरम दल के तीन प्रमुख नेताओं लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चन्द्र पाल) में से एक थे। उन्होंने पंजाब नैशनल बैंक (पीएनबी) और लक्ष्मी बीमा कम्पनी की स्थापना भी की। लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को दुधिके गॉव में हुआ था जो वर्तमान में पंजाब के मोगा जिले में स्थित है। वह मुंशी राधा किशन आज़ाद और गुलाब देवी के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनके पिता बनिया जाति के अग्रवाल थे। बचपन से ही उनकी माँ ने उनको उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा दी थी। लाला लाजपत राय ने बहुत से क्रांतिकारियों को प्रभावित किया और उनमें एक थे शहीद भगत सिंह। सन् 1928 में साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान हुए लाठी-चार्ज में ये बुरी तरह से घायल हो गये और 17 नवम्बर सन् 1928 को परलोक सिधार गए।

महर्षि दयानन्द और दीपावली

डॉ. महेश विद्यालंकार, वैदिक प्रवक्ता

महापुरुषों की परम्परा में ऋषि दयानन्द की अलग पहचान और महत्व है। जैसे सभी पर्वतों में हिमालय की अलग विशेषता, आकर्षण तथा ऊंचाई है उसी प्रकार स्वामी दयानन्द का निराला व्यक्तित्व एवं कृतित्व था। अज्ञान, अंधकार, ढोंग, पाखंड आदि में डूबी मानव जाति के उद्धार के लिए और भारत माता के आंसू पोंछने के लिए वह निराला महापुरुष उनसठ वर्ष की अवधि के लिए संसार में आया था।

शिवरात्रि को आत्मबोध व सत्यबोध हुआ। फिर घर से सच्चे शिव एवं सत्य को पाने के लिए निकल पड़े तथा जीवन भर घर की ओर मुड़कर नहीं देखा। सम्पूर्ण जीवन देश, धर्म, संस्कृति, वेदोद्धार मानव उत्थान और कल्याण में लगा दिया, अपने लिए न कुछ चाहा, न मांगा, न संग्रह किया और न कोई चेला व चेली बनाई, न कोई मठ-मंदिर व गद्दी बनाई। ऋषि ने कोई धर्म, पंथ व नया सम्प्रदाय नहीं चलाया, वे सारा जीवन जहर पीते रहे, अपमान सहते रहे, गालियां और पत्थर खाते रहे तथा बदले में संसार को सीधा सच्चा एवं सरलमार्ग बताते रहे।

दीपावली से ऋषि दयानन्द के जीवन की अमर गाथा जुड़ी है। इसी दिन ऋषि ने अपना पंच भौतिक नश्वर शरीर छोड़ा था। एक दीप बुझा, किन्तु वे असंख्य लोगों को नवजीवन प्रकाश दे गए। ऐसा अद्भुत, विलक्षण, पुण्यात्मा, योगी, ऋषि, त्यागी, तपस्वी महापुरुष इतिहास में दुर्लभ है। यह दीपावली उन्हीं के उपकारों, योगदान और स्मृति का पर्व है। ऋषि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने तथा अश्रुपूरित होकर उन्हें नम्र श्रद्धांजलि देने का निर्वाणोत्सव है। वह युगपुरुष संसार में जो सत्य, धर्म व वेद की ज्योति जला गये है। वह युगों तक संसार को संमार्ग दिखाती रहेगी।

वे सत्य के शोधक, सत्यवक्ता, सत्यप्रचारक अंत में सत्य पर ही शहीद हो गए। उन्होंने गलत बातों के साथ कभी समझौता नहीं किया, यदि ढोंग, पाखंड, गुरुडम, पुजापे-चढ़ावे आदि के साथ समझौता किया होता तो वे उन्नीसवीं सदी के सबसे बड़े भगवान् होते, उनके कट्टर विरोधी भी अंदर से उनके प्रशंसक थे। स्वामी जी का जीवन मन-वचन तथा कर्म से एक जैसा था, उनके सम्पर्क में जो आया, जिसने उन्हें देखा, सुना एवं पढ़ा उसी का कायाकल्प हो गया न जाने कितने गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, हंसराज, अमीचन्द आदि के जीवन संत तथा परोपकारी बन गए।

इतना जबरदस्त चुम्बकीय आकर्षण एवं जादुई शक्ति और किसी महापुरुष में नजर नहीं आता है, लोग तलवार लेकर आए शिष्य बनकर गए, जिधर से निकले उधर ही ढोंग-अज्ञान, पाखंड मिटाते चले। वह सत्य का पुजारी, निर्भीक संन्यासी संसार में बुराईयों के विरुद्ध अकेले लड़ा, विजयी हुआ, उन्हें अनेक बार जहर दिया गया, वे बदले में जगत को अमृत देते रहे। गालियां देने वाले को फल व मिठाइयां भिजवाते थे, कई जगह पत्थरों की वर्षा हुई, वे इसे फूलों की वर्षा मानते थे, 'अपने विषदाता जगन्नाथ को प्राणदान दिया' दुनिया के इतिहास में ऐसा उदाहरण दूसरा न मिलेगा। विषदाता जगन्नाथ को क्षमाकर, रुपये देकर भाग जाने की सलाह देने वाला महायोगी, पुण्यात्मा ऋषि दयानन्द ही थे। स्वामी जी के जीवन की अनेक घटनाएं और बाते हैं, जिससे हम बहुत कुछ शिक्षा, प्रेरणा, मार्गदर्शन और आदर्श प्राप्त कर सकते हैं। उनका जीवन भी प्रेरक था और मृत्यु भी प्रेरक बनी। जाते-जाते भी नास्तिक गुरुदत्त को आस्तिक बनाकर वैदिक धर्म का दीवाना बना गए।

घनघोर अमावस्या की रात में संसार को ज्ञान तथा प्रकाश की दीपावली देकर, ऋषि का जीवन भी निराला था, उनकी दीवाली भी निराली थी। संसार के इतिहास में ऐसा अनोखा व्यक्ति नहीं मिलेगा, जो होश में तारीख पूछकर, प्रभु को धन्यवाद करके, प्रार्थना करते हुए, हंसते-मुस्कुराते हुए जिसने शरीर छोड़ा हो, वह ऋषि दयानन्द थे, वे मृत्यु के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गए, उनकी मृत्यु सुखांत थी 'क्योंकि उन्होंने सम्पूर्ण जीवन प्रभु की इच्छा पूर्ण हो' में लगा दिया था। 'ऐसे महापुरुष की स्मृति का पर्व है दीपावली' जिसे हमने हाल ही में मनाया है। आर्य समाज ऋषि दयानन्द का जीवंत स्मारक है, ऋषि के अधूरे विचारों, सिद्धान्तों आदर्श आदि का प्रचारक एवं प्रसारक आर्य समाज है। आर्य समाज के अतीत का इतिहास तप-त्याग, बलिदान, सेवा, निमार्ण सुधार आदि कार्यों से भरा हुआ है। आर्य समाज के क्रांतिकारी विचारों, कार्यों, वैज्ञानिक चिंतन, सत्यमूलक सिद्धांतों आदि ने जीवन व जगत् को बड़ी दूर तक प्रभावित किया। आर्य समाज ने एक प्रकार से चौकीदार की भूमिका निभाई, जागते रहों।

(शेष पेज-23 पर)

आर्य समाजवाद और भाग्यवाद

■ स्वामी अग्निवेश

प्रश्न : क्या आप पुनर्जन्म का सिद्धान्त मानते हैं?

उत्तर : मानते हैं।

प्रश्न : क्या आप कर्मफल का सिद्धान्त भी मानते हैं?

उत्तर : मानते हैं।

प्रश्न : तो फिर आपको यह भी मानना पड़ेगा कि आज हमें अपने समाज में जो आर्थिक विषमता दिखाई पड़ रही है अमीर-गरीब के बीच जो खाई दिखाई पड़ रही है, उसका मूल कारण पूंजीवादी अर्थव्यवस्था आदि न होकर पिछले जन्म के कर्मों का फल है। कर्मफल का सिद्धान्त यह बताता है कि जो व्यक्ति जैसा कर्म करता है उसको अगले जन्म में वैसा ही फल मिलता है। इस सिद्धान्त को कोई टाल नहीं सकता। आज जो गरीब हैं, भूखे हैं, नंगे हैं, दु:खी हैं उन्होंने अवश्य अपने पिछले जन्मों में बहुत बुरे कर्म किए होंगे-इसीलिए परमात्मा ने इस जन्म में उन्हें यह दंड दिया है जो उन्हें अवश्य भुगतना पड़ेगा। इसी प्रकार जिन लोगों ने पिछले जन्म में शुभ कर्म किए थे उन्हें परमात्मा की कृपा से अपार धन-दौलत और तद्जन्य सुख-सुविधा की प्राप्ति होती है। इसे पूंजीवाद और शोषण आदि कहना ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था का अपमान करना है। जब आप पहले मान चुके है कि आर्य समाजवाद में कम्यूनिज्म की तरह नास्तिकता नहीं है और आप ईश्वर तथा आत्मा की सत्ता को स्वीकार करते हैं तो फिर आपको यह भी मानना चाहिए कि यह गरीबी और अमीरी का भेद हमारे आपके चाहने या न चाहने पर निर्भर नहीं करता वरन् परमात्मा की न्याय-व्यवस्था के अनुसार चलता है। और हमें इसमें कोई दखल नहीं देना चाहिए।

उत्तर : जब परमात्मा ने आपको नंगा पैदा किया था तो आपने कपड़े पहन कर उसकी न्याय-व्यवस्था में दखल क्यों दिया? जब परमात्मा ने आपको अनपढ़ पैदा किया था तो आपने पढ़ना-लिखना सीखकर उसकी न्याय-व्यवस्था में दखल क्यों किया? जब आप भूखे, नंगे और अनपढ़ पैदा होकर भी अपनी हालतों में परिवर्तन करने का प्रयास करते हैं तब आपका उसी तरह सारे समाज की हालत को भी बदलने का प्रयास करना चाहिए। इस तरह के प्रयासों को परमात्मा की न्याय-व्यवस्था में दखल नहीं माना जा सकता। बल्कि परमात्मा ने तो हमें कर्म करने की स्वतंत्रता प्रदान की है, हमें बुद्धि दी है, हमें बल दिया है और पुरुषार्थ की प्रबल प्रेरणा दी है। इसके साथ ही परमात्मा ने हमें वेद के माध्यम से यह ज्ञान दिया है कि हम समाजवाद के रास्ते चलकर अभ्युदय और नि:श्रेयस का मार्ग प्रशस्त करें।

कर्म फल के सिद्धान्त का यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम अपनी परिस्थितियों में परिवर्तन के लिए कर्म ही न करें और सब कुछ ईश्वर की व्यवस्था पर छोड़कर आर्थिक-शोपण और विषमता को भाग्यवाद के मत्थे मढ़ दें। कर्मफल का सिद्धान्त तो उल्टे हमें इस बात की प्रेरणा देता है कि यदि हम इस शोपण और विपमता को मिटाने के लिए कर्म करेंगे तो यह अवश्य मिटकर रहेगी और आर्य समाजवाद रूपी फल भी अवश्य मिलेगा ।

प्रश्न : तो क्या आप भाग्य पर भी विश्वास नहीं करते? जिसके भाग्य में जो लिखा है उसे कोई मिटा नहीं सकता। जिसे आप आर्थिक विपमता कहते हैं- वह भाग्य की देन है। कर्म तो आदमी बाद में करेगा-पर जब जन्म ही एक गरीब परिवार में लेगा तो उसे गरीबी के सारे कप्ट उठाने ही पड़ेंगे- दूसरी और एक बालक अमीर के घर में पैदा होकर बिना किसी कर्म के उसके करोड़ों की सम्पति कोठी, कार आदि का उत्तराधिकारी बन जाता है- यह सब भाग्य का चक्कर नहीं है तो और क्या है?

उत्तर : यह कोई भाग्य का चक्कर नहीं है वरन सामाजिक एवं आर्थिक अन्याय है। योग्यता आदि की परख

आज जो गरीब हैं, भूखे हैं, नंगे हैं, दु:खी हैं उन्होंने अवश्य अपने पिछले जन्मों में बहुत बुरे कर्म किए होंगे-इसीलिए परमात्मा ने इस जन्म में उन्हें यह दंड दिया है जो उन्हें अवश्य भुगतना पड़ेगा। इसी प्रकार जिन लोगों ने पिछले जन्म में शुभ कर्म किए थे उन्हें परमात्मा की कृपा से अपार धन-दौलत और तद्जन्य सुख-सुविधा की प्राप्ति होती है। इसे पूंजीवाद और शोषण आदि कहना ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था का अपमान करना है। जब आप पहले मान चुके है कि आर्य समाजवाद में कम्यूनिज्म की तरह नास्तिकता नहीं है और आप ईश्वर तथा आत्मा की सत्ता को स्वीकार करते हैं तो फिर आपको यह भी मानना चाहिए कि यह गरीबी और अमीरी का भेद हमारे आपके चाहने या न चाहने पर निर्भर नहीं करता वरन् परमात्मा की न्याय-व्यवस्था के अनुसार चलता है। और हमें इसमें कोई दखल नहीं देना चाहिए।

किए बिना किसी परिवार विशेष में जन्म लेने के कारण गरीब या अमीर बन जाने वाली बात नितान्त पूंजीवादी दुर्व्यवस्था की उपज है। यदि ऐसी दुर्व्यवस्था भाग्य के नाम पर पनप रही हो तो ऐसे भाग्य से भी लड़ना और अपने पुरुषार्थ से उसे बदल डालना हमारा कर्तव्य है। इस संबंध में निर्देश करते हुए सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी समर्पणानन्द जी कायाकल्प में लिखते हैं कि- 'जो बात सत्यासत्य विवेक सहृदय लोगों को अखरती है, वह यह है कि वह पूंजी बिना परीक्षा के उस पूंजीपति के पुत्र को क्यों मिले और दुरुपयोग-पर-दुरुपयोग करने पर भी उसके हाथों में क्यों पड़ी रहें?'

इसका उत्तर बहुत से लोग विधाता का विधान, कर्मफल, भाग्य अथवा ईश्वराज्ञा के नाम से देते हैं। ईश्वर के सबसे बड़े शत्रु उसके यह भाग्यवादी भक्त हैं। वे भूल जाते हैं कि जिस भगवान ने हमें विशेष अवस्थाओं में जन्म दिया है उसी ने हमें उन्हें अपने अनुकूल करने की शक्ति और आदेश भी तो दिया है। हाथ, पैर, आंख, नाक, कान और इन सबसे बढ़कर सिर यह सब मूल्यवान सम्पत्ति भगवान ने भाग्य से लड़कर उसे जीतने के लिए ही दी है। भगवान ने कहा-

दूष्या दूषिरसि हेत्या हेतिरसि मेन्या मेनिरसि आप्नुहि श्रेयांसम्। अति समम्-क्राम (अथर्व. 2-11-1)

अर्थात् तू शस्त्रों को काटने वाला शस्त्र है, तू दूषणों को दूषित कर देने वाली महाशक्ति है, तू चिंताओं का पहले से चिंतन करने वाला अनागत विधाता है। उठ! जो तेरे साथ की पंक्ति में है उन्हें पीछे छोड़ और जो अगली पंक्ति में है उनमें जा मिल।

स्वामी दयानन्द की मूल विचारधारा जन्म पर आधारित व्यवस्थाओं के प्रति विद्रोहात्मक है। वे तो जन्म के आधार पर किसी को ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि मानने को तैयार नहीं हैं। सारी व्यवस्था ही वे व्यक्ति के गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित बनाना चाहते हैं। यहां तक कि विवाह आदि का संबंध भी योग्यतानुसार चाहते हैं और जो व्यक्ति जन्म के आधार पर मां-बेटे और पिता-पुत्र के संबंध को बदल कर गुण, कर्म, स्वभावानुसार बनाना चाहता हो, उसके बारे में यह सोचना कि जन्मानुसार गरीबी, अमीरी की खाई का समर्थन करते हैं-घोर अन्याय होगा। स्वामी दयानन्द की यह दृढ़ मान्यता है कि प्रारब्ध से पुरुषार्थ बलवान है-वे भाग्यवादी होने के बदले पुरुषार्थी होना श्रेयस्कर समझते हैं। पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है

वह भगवान ही तो कहता है- कृतं मे दक्षिणेहस्ते जयो मे सव्य आहित। (अथर्व 7-51-8) अर्थात् हे मनुष्य! सदा याद रख, पुरुषार्थ तेरे दाहिने हाथ में रहता है और विजय तेरे बाएं हाथ में रहता है। भगवान का हाथ, पैर, सिर आदि शक्तियां हमें देना ही इस बात का प्रमाण है कि हमारा काम भाग्य से युद्ध करना है।

प्रश्न : किन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती तो स्पष्ट रूप से गरीब-अमीर के बीच की खाई को पूर्वजन्म के कर्मों पर आधारित ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था मानते हैं। उदाहरण के लिए सत्यार्थ-प्रकाश के नवम समुल्लास में देखिए। वे मानते हैं कि जो पुण्यात्मा जीव है वह राजा के घर पैदा होकर सुखी रहता है और पापी जीव घसियारे के घर उत्पन्न होकर दारिद्रय का दु:ख भोगता है।

उत्तर : इस प्रकार के उदाहरण को एकांगी रूप में लेने पर उपरोक्त भ्रम का होना स्वाभाविक है। पर किसी भी व्यक्ति की विचार धारा के प्रति न्याय करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी मूल विचारधारा को समझा जाय। स्वामी दयानन्द की मूल विचारधारा जन्म पर आधारित व्यवस्थाओं के प्रति विद्रोहात्मक है। वे तो जन्म के आधार पर किसी को ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि मानने को तैयार नहीं हैं। सारी व्यवस्था ही वे व्यक्ति के गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित बनाना चाहते हैं। यहां तक कि विवाह आदि का संबंध भी योग्यतानुसार चाहते हैं और जो व्यक्ति जन्म के आधार पर मां-बेटे और पिता-पुत्र के संबंध को बदल कर गुण, कर्म, स्वभावानुसार बनाना चाहता हो, उसके बारे में यह सोचना कि जन्मानुसार गरीबी, अमीरी की खाई का समर्थन करते हैं-घोर अन्याय होगा।

स्वामी दयानन्द की यह दृढ़ मान्यता है कि प्रारब्ध से पुरुषार्थ बलवान है-वे भाग्यवादी होने के बदले पुरुषार्थी होना श्रेयस्कर समझते हैं। देखो, सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में वे स्पष्ट लिखते हैं कि-पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।

इसी बात को उर्दू का एक शायर कहता है- 'खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले। खुदा बंदे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है।' ➲

ओ३म : कस्मै देवाय हविषा विधेम

डॉ. मंजु नारंग, डी.लिट.

प्रायः प्रत्येक व्यक्ति में यह जिज्ञासा रहती है कि किस देव विशेष को उसको आहुति प्रदान करनी चाहिए? अथर्ववेद के चतुर्थ कांड के द्वितीय सूक्त के मंत्रों में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' हम किस देवता को आहुति प्रदान करेंकि इस प्रकार के प्रश्न के द्वारा परमात्मा की विशेषताओं को विविध प्रकार से अभिव्यक्त किया गया है। यज्ञ काल में आहुति प्रदान करते समय जब हम यह संकल्प भी लेते हैं कि हमारे द्वारा प्रदत्त आहुति मंत्र विशेष में उच्चरित देवता के लिए ही है, अन्य किसी देव के लिए नहीं है।

हम हवि के द्वारा हवन करते हैं तथा हवन का अर्थ आहुति समर्पित करना होता है। इस प्रकार से हवन करते समय हमारे अंदर पूर्णरूपेण समर्पण की भावना विद्यमान करती है तथा प्रदत्त आहुति के द्वारा स्व अधिकार का हम पूर्णतया परित्याग कर देते हैं। जिस परमपिता परमात्मा ने हमको सर्वस्व प्रदान किया है, उसके लिए आत्म समर्पण करना हमारा कर्त्तव्य है। अथर्ववेद में स्पष्ट किया गया है कि जो परमात्मा हमको प्राण एवं शारीरिक बल प्रदान करता है। जिसके व्यापक एवं उत्तम शासन की हम सभी उपासना करते हैं। जो परमात्मा दोपाये तथा चौपाये जीव समूह का स्वामी है। उस दिव्य स्वरूप परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कौन सा देव हमारे द्वारा उपासनीय हो सकता है?

यः आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्यछायाऽमृतं यस्यमृत्युः कस्मै देवाय हविषां विधेम॥ अथर्ववेद 4/2/1

जो श्वॉस लेते हुए चेतन जगत् का तथा नेज निमीलित किये हुए अचेतन संसार का एक मात्र स्वामी है। जिसके आश्रय से अमृतत्व की प्राप्ति होती है। वह परमात्मा श्रेष्ठ गुण की प्राप्ति हेतु सेवनीय है-

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैको राजा जगतो बभूव। यईशेऽस्यद्विपदेश्चतुष्पदैः कस्मै देवाय हविषा विधेम। अथर्व वेद 4/2/2

परस्पर विरोध करने वाले तथा आक्रोशपूर्वक युद्ध में लीन उभयपक्षीय सैनिक आत्मरक्षा हेतु जिसकी शरण को प्राप्त करते हैं। भय के समय में एक-दूसरे की शरण में नहीं जाकर सभी व्यक्ति जिसका एकमत से आवाहन करते हैं तथा जिसकी प्राप्ति का मार्ग उस पर से चलने वाले को योग्यता की वृद्धि करने वाला है। जिसकी कृपा से द्युलोक तथा पृथिवी लोक विस्तारा को प्राप्त हुआ है। जिसके प्रकाश से यह सूर्य अपने प्रकाश को चारों दिशाओं में व्याप्त कर पा रहा है, वही देव उपासना के योग्य है- अथर्ववेद 4/2/3-4

जिसकी महिमा से समस्त हिमवान् पर्वत उत्पन्न हुए हैं। समुद्र तथा नदियां जिसके विभूति स्वरूप हैं। चारों दिशाएं जिसकी भुजा रूप है, उस परमात्मा का हम हवि के द्वारा सेवन करते हैं-

यस्य विश्वे हिमवन्तो महित्वा समुद्र यस्य रसामिदाहुः। इमाश्च प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ अथर्ववेद 4/2/5

सत्य नियम से चलने वाली जीवन शक्ति में सम्पन्न तथा गर्भ को धारण करने वाले जल ने जिसके द्वारा प्रारम्भ में विश्व को गतिमान की थी। जिन दैवी शक्तियों के ऊपर एक देव विराजमान हैं, वही परमात्म देव हम सभी के द्वारा उपासनीय हैं। प्रारम्भ में सूर्य के सदृश द्युतिमान् पदार्थों को जिसने अपने गर्भ में पूर्व में ही धारण किया था। वह उत्पन्न होकर सत्ता के रूप में आसमान प्रपंच का असाधारण स्वामी हुआ। उसी ने भूलोक तथा सूर्य को धारण किया। ऐसे परमात्मा के उत्तम गुणों को प्राप्त करके हम सभी आनंद का उपभोग करें- अथर्ववेद 4/2/6-7

जगत के आरम्भ में सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता मूल प्रवाह के प्रेरित होते समय उत्पन्न होने वाले पदार्थ मात्र का गर्भ के ऊपर की झिल्ली के समान जो तेजस्वी संरक्षक था, वही परमात्मा हम सभी के द्वारा उपासनीय है-

आपो वत्सं जनयंतीर्गर्भमग्रे समैरयन्। तस्योत जायमानस्योत्व आसीद्धिरण्यतः कस्मै देवायं हविषा विधेम। अथर्ववेद 4/2/8

उपर्युक्त विशिष्टताओं से सम्पन्न परमेश्वर ही उपासना के योग्य है। इससे भिन्न अन्य किसी देव की उपासना नहीं करनी चाहिए। इस सूक्त के मंत्रों में 'कस्मै देवाय हविषा विधेम' के प्रश्न के द्वारा परमात्मा के गुणों का वर्णन करके उसी को आराधनीय माना है। वही हम सभी के लिए सम्मानीय एवं पूज्य है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

माता निर्माण करने वाली होती है

माता ही अपने बच्चे का निर्माण करने वाली होती हैं। प्राचीन इतिहास में सबसे सुंदर उदाहरण मदालसा देवी का है। मदालसा के तीन पुत्र हुए। उनके नाम रखे गये-विक्रांत, सुबाहु और अरिदमन। माता उन्हें लोरी देती हुई कहती ?

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि
संसारमायापरिवर्जितोऽसि।
संसारमायां त्यज मोहनिद्रां
मदालसा शिक्षयतीह बालम् ।।

भावार्थ– हे पुत्र! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन=निर्दोष है, संसार की माया से रहित है। इस संसार की माया को त्याग दे। उठ, खड़ा हो, मोह को परे हटा। इस प्रकार मदालसा अपने पुत्र को शिक्षा देती है।

इस शिक्षा का परिणाम क्या हुआ ? तीनों पुत्र राज-पाट का मोह त्यागकर वनों को चले गये। यह स्थिति देख महाराज ने कहा- देवी! राज-पाट कौन सम्भालेगा, क्या सबको संन्यासी बना देगी ? जब चौथा पुत्र उत्पन्न हुआ तब मदालसा ने उसका नाम रखा-अलर्क। माता ने उसे राजनीति का उपदेश दिया। उसे लोरी देते हुए माता कहती थी ?

धन्योऽसि रे यो वसुधामशत्रु-
रेकश्चिरं पालयिताऽसि पुत्र !
तत्पालनादस्तु सुखोपभोगो
धर्मात् फलं प्राप्स्यसि चामरत्वम् ।।

– मार्कण्डेयपुराण 26/35

हे पुत्र! तू धन्य है जो अकेला ही शत्रुओं से रहित होकर इस पृथिवी का पालन कर रहा है। धर्मपूर्वक प्रजापालन से तुझे इस लोक में सुख और मरने पर मोक्ष की प्राप्ति होगी। राज्य की उत्तम व्यवस्था का उपदेश देते हुए वह कहती–

राज्यं कुर्वन् सुहृदो नन्दयेथाः
साधून् रक्षंस्तात ! यज्ञैर्यजेथाः ।
दुष्टान्निघ्नन् वैरिणश्चाजिमध्ये
गोविप्रार्थे वत्स ! मृत्युं व्रजेथाः ।।

–मा. पु. 26/41

हे पुत्र! तू राज्य करते हुए अपने मित्रों को आनंदित करना, साधुओं=श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षा करते हुए खूब यज्ञ करना। गौ और ब्राह्मणों की रक्षा के लिए संग्राम-भूमि में शत्रुओं को मौत के घाट उतारता हुआ तू स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त हो जाना।

आज माताएं अपने कर्त्तव्य को भूल चुकी हैं। आज माता और पिताओं को बच्चे को गोद लेने में शर्म आती है। बच्चे नौकरानी अथवा 'आया' की गोद में पलते हैं। परिणामस्वरूप बालकों का सुनिर्माण नहीं हो पाता।

बालकों पर घर के वातावरण, रहन-सहन और आचार-विचार का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। जो माता-पिता आदि स्वयं किसी को 'नमस्ते' नहीं करते। जिन परिवारों में माता-पिता देर से उठते हैं वहां बच्चे भी देर से उठते हैं। जो पिता बीड़ी, सिगरेट, मद्य-मांस आदि का सेवन करते हैं उनके बच्चे भी इन दुर्गुणों से बच नहीं सकते।

इसके विपरीत जिन परिवारों में संध्या और यज्ञ होता है, आसन और प्राणायाम का अभ्यास होता है उन परिवारों के बच्चों में भी वेसे ही गुण विकसित हो जाते हैं। यदि माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे श्रेष्ठ, सदाचारी और आदर्श नागरिक बनें तो माता-पिता को स्वयं अपने जीवन में परिवर्तन लाना होगा। माता-पिता को अपने आचरण के द्वारा उन्हें शिक्षा देनी होगी। अपने बच्चों को सदाचारी, सभ्य और श्रेष्ठ बच्चों की संगति में रखना चाहिए, दुराचारी, असभ्य और गुणहीन बच्चों की संगति से अपने बच्चों को दूर रखें।

(साभार : 'आदर्श परिवार' पुस्तक से उद्धृत)
लेखक : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती)

➡

कर्तव्य

- कर्तव्य कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसको नाप-जोखकर देखा जाए। -**शरदचन्द्र**
- कर्तव्य का पालन ही चित की शांति का मूल मंत्र है। कर्तव्य ही ऐसा आदर्श है जो कभी धोखा नहीं दे सकता। कर्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नहीं करता। - **प्रेमचंद**
- कर्तव्य कठोर होता है भावप्रधान नहीं। -**जयशंकर प्रसाद**
- जो कार्य आपके सामने है उसे तत्काल एवं निष्कपट भाव से करना ही कर्तव्य है, यही आपके अधिकार की पूर्ति है। -**गेटे**
- दूसरे कर्तव्य को पूर्ण करने की क्षमता ही एक कर्तव्य की पूर्ति का पुरस्कार है। -**जार्ज इलियट**
- कुछ न कुछ कर बैठने को ही कर्तव्य नहीं कहा जा सकता। कोई समय ऐसा भी होता है, जब कुछ न करना ही सबसे बड़ा कर्तव्य माना जाता है। - **रविंद्रनाथ ठाकुर**
- बैर लेना या करना मनुष्य का कर्तव्य नहीं है, उसका कर्तव्य क्षमा है। - **महात्मा गांधी**

OO

Rigvedadibhashyabhumika by Swami Dayananad

Rigvedadibhashyabhumika by Swami Dayananad... Dr Vivek Arya

Swami Dayanand, the founder of Aryasamaj dedicated his whole life towards the propagation of the message of the Vedas. Swami Dayanand completed the commentary on Yajurveda and up-to the 7th mandala of the Rigveda. He also published Rigvedadibhashya-bhumika as introduction to the Vedas. Before Swami Dayanand advent, Vedas were considered as a book of cumbersome rituals confined to the priest class.Swami ji not even made the Vedas accessible to the common man but also made their interpretation useful and worthy for everyone. He established certain landmarks for the understanding of the Vedas. This article is dedicated towards the understanding of contribution of Swami Dayanand to the Vedas.

Swami Dayanand says that the Vedas are self sufficiently authoritative being the creation of the God. The Vedas being the perfect knowledge of God is not dependent on other man made texts. The texts other than the Vedas are considered true only if they are in accordance with the Vedas. Swami Dayanand in Satyarth Prakash writes that "Of these too, those which appear to be contradictory to the Vedas, should be rejected; for the Vedas being created by the God, are infallible and self-sufficiently authoritative, that is to say, the Vedas are their own authority." Thus, Swami Dayanand established the landmark of supreme and self testified authority of the Vedas.

Swami ji said that God is all knowing. So, he revealed his supreme knowledge of Vedas for the benefit of whole mankind. Swami ji said that the four Vedas Rigveda, Yajurveda, Samaveda and Atharveda were revealed in the conscience of the four Rishis Agni, Vayu, Aditya and Angira respectively by God. God is all powerful and all pervading. So, he does not need mouth or vocal organs to reveal his knowledge. The four seers were not composer of the Vedas. They only realized and expounded the meaning of the Vedic verse.

The Nirukta by Yaskacharya defines Rishi as one who sees or understands the meaning of the mantra. Rishi is not one who created mantra but who realized the meaning of the mantra. Thus, Swami Dayanand established the landmark that the Vedas were not composed by the four Rishis but realized by the four Rishis. God is the ultimate composer of the Vedas.

One of the biggest achievement of Swami Dayanand was to establish this fact that Vedas are not History books just like Bible or Quran. Swami ji first established this fact that the four Vedas were revealed with the beginning of Human life. So, no question of inclusion of history appears in front of the Vedas. They were not created after passing of certain passage of time just like the Abrahamic beliefs. This confusion regarding History in Vedas arises due to misunderstanding of the Vedic words. There are certain words like Visvamitra, Vasistha, Urvashi etc. in the Vedas. There is an obsession among the Indian Acharyas like Sayana, Mahidhara and other Western indologists to impose history in Vedas using these words. To interpolate history using Vedic words lead to lot of confusions.

गौ- किरणें

आकाश भास बनकर आना ।
रविरश्मि! हमारे उर आना ॥
गौ - किरणें दोनों आतीं ।
जग में रूप सजाती आतीं ।
गगन भूमि जग रसक बनकर,
स्वर्णिम ज्योति जगाती आतीं ।।
वातास श्वॉस बनकर आना ।
रवि रश्मि! हमारे उर आना ।।
वेदी मन्त्र गुञ्जरित करतीं ।
दोनों कान निमंत्रित करतीं ।
पूजो दान सुसंगति द्वारा,
जीवन यज्ञ संचरित करतीं ।
विश्वास आस बनकर आना ।
रवि रश्मि ! हमारे उर आना ॥
कानों के स्वर्णिम आभूषण ।
हों शब्द प्रेरणा परिभूषण ।
सुख समाज में सदा बढ़ायें,
करते रहें दूर दुःख दूषण ॥
उल्लास हास बनकर आना।
रवि रश्मि ! हमारे उर आना ॥

➲ **देवातिथि देवनारायण भारद्वाज**

चलना संभल के

जवानों जवानी में चलना संभल के।
आती नहीं है ये दोबारा निकल के।।
कठिन यह जवानी की मंजिल है प्यारों।
कभी लड़खड़ा जाओ कुछ दूर चल के।।
विषय रूपी रहजन अनेकों मिलेंगे।
खबरदार कोई न ले जाये छल के।।
सुधर जाये परलोक जिससे यतन कर।
जब आयेगी मृत्यु न जायेगी टल के।।
'वीरेन्द्र' न दिल है लुटाने की वस्तु।
लुटाया यह जिसने रहा हाथ मल के।।

➲ **चौधरी वीरेन्द्र कुमार 'वीर'**

ओ३म् नाम का जाप कर मन

ओ३म् नाम का जाप कर
कण-कण में है ओ३म् बसा
ओ३म् में विश्वास कर
ओ३म् से कर शुरू यात्रा
ओ३म् है अन्तिम पड़ाव
ओ३म् से तू ऊर्जा पाता
ओ३म् से ही शीतल भाव
ओ३म् जीव हअ ओ३म् आत्मा
ओ३म् से भव पार कर।।
ओ३म् धुन में चांद-तारे
और गाता ब्रह्माण्ड है
ओ३म् सुर में वायु गाती
और शिखा प्रचण्ड है
ओ३म् स्वर में हर कोई गाए
ओ३म् स्वर सुर सार कर।।
ओ३म् जल में ओ३म् थल में
ओ३म् से है गगन विशाल
ओ३म् अचल है ओ३म् अटल है
ओ३म् से स्वयं को संभाल
ओ३म् आदि ओ३म् अन्त है
ओ३म् से मन शान्त कर।।
ओ३म् राग हो मन भावन हो
ओ३म् रहे तेरे मन में
ओ३म् महिमा तेरा हृदय स्थल हो
ओ३म् रहे मन आंगन में
ओ३म् ध्यान कर समाधिष्ट हो
इस ओ३म् गीत से प्यार कर।।

ओम सिंह सुहाग

युवाशक्ति को निरर्थक कार्य में झोंकने का षड्यंत्र

सुरेंद्र कुमार रैली

अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

पाखंड और अंधविश्वास को फैलाने में मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका है। असंख्य चैनलों और समाचार पत्रों ने अधिक से अधिक धन कमाने हेतु लगता है कि इन अनैतिक कार्य को करने की जिम्मेदारी ले ली है। कोई बिरला चैनल ही होगा जो इसमें शामिल न हो। 'कांवड कथा और शिवलिंग बस वहीं स्थापित हो गया।' कथा इस प्रकार कही गई है कि रावण ने हिमालय पर्वत पर शिवजी के दर्शन के लिए घोर तपस्या की और शिवजी पर अपना एक-एक सिर काट कर चढ़ाना शुरू कर दिया। उसने अपने नौ सिर चढ़ा दिये।

जब वह अपना दसवां सिर चढ़ाने को उद्यृत हुआ तो भगवान शंकर ने दर्शन दिये और प्रसन्न होकर रावण के दसों सिरों को पहले जैसा ही कर दिया। रावण ने उनसे शिव लिंग की मांग की तो शिवजी ने रावण को इस शर्त के साथ लिंग ले जाने का वर दिया कि अगर वह लिंग को ले जाते समय जमीन पर रख देगा तो लिंग वहीं स्थापित हो जाएगा। रावण शिव लिंग लेकर चल दिया। सभी देवताओं को चिंता हो गई और वह विष्णु जी के पास गए ताकि रावण को शिव लिंग ले जाने से रोका जाए, भगवान विष्णु जी ने तीन पवित्र नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती से कहा कि वे रावण के पेट में प्रवेश कर जाएं। नदियों के जल के कारण रावण को तेज लघुशंका लगी तो उसने गडरिये के रूप में खड़े विष्णु जी को कहा कि वह शिवलिंग पकड़े रखें और वह लघुशंका करके उसे वापस लेने आते हैं। रावण की लघुशंका समाप्त ही नहीं हो रही थी और उस लघुशंका से एक सरोवर का निर्माण हो गया था, जिसे शिव गंगा कहते हैं। इस बीच गड़रिये ने शिव लिंग भूमि पर रख दिया। रावण ने वापस आकर जब यह देखा तो उसे बड़ा गुस्सा आया और उसने उस पर जोरदार हाथ मारा तो आधा शिवलिंग जमीन में धंस गया और आधा ऊपर रह गया। यह शिवलिंग रखा गया है वह भारत के वैद्यनाथ धाम भगवान शंकर के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है।

प्रश्न उठता है कि शेष 11 लिंग कैसे-कैसे स्थापित हुए होंगे और उनकी कथा क्या है? इस कथा में विरोधाभास है। एक तरफ आप कह रहे हैं कि 'शिवलिंग बस वहीं स्थापित हो गया' और कुल संख्या 12 बता रहे हो? देश के युवाओं को ऐसी भ्रांतिपूर्ण तथ्यों से परे कहानी छाप रहे हैं जिसकी क्या आवश्यकता पड़ गई? इससे देश और दुनिया में अंधविश्वास बढ़ेगा। युवा पीढ़ी सोचेगी कि भक्ति तो सिर काट कर ही होती है और सिर काटने के बाद भी आदमी जीवित रह सकता है? इतना ही नहीं यदि भगवान शंकर प्रसन्न हो जाएं तो वह दुबारा वैसे ही सिर लगा भी सकते हैं। यह आज के चिकित्सा विज्ञान के मुंह पर तमाचा है। रावण 4 वेद व 6 शास्त्रों का विद्वान था, इसीलिए उसे दशानन कहते हैं।

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा ''आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति (पं)'' द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 26 वर्षो से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 108 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। केवल भोजन शुल्क ही लिया जाता है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)

प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

उपप्रधान, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा

प्रतीत होते पथ से फिसलते

आर्य भूपाल शर्मा, एमए, साहित्यरत्न
कौशांबी, गाजियाबाद

आर्य जन तो उन तथ्यों एवं परिस्थितियों से पूर्णतया परिचित हैं जिनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई थी। चारों ओर दुराचार, वैमनस्यता तथा अराजकता का बोल बाला था और इन सबका केवल और केवल कारण था कुरीतियों पर चलना जिसकी सत्ता उनके समय में आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार में अनेक विद्वानों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा जन-जन तक वेदों की ऋचाओं को फैलाया। मानो सारा राष्ट्र वेदमय हो गया था।

पाखंड का नंगा नाच हो रहा था। ऋषिवर बड़े व्यथित हुये, ये सब अनाचार दृश्य देखकर। उन्होंने अनर्थ ग्रंथों का बहिष्कार करने, वेदों की पुनर्स्थापना करने, शुद्रों एवं महिलाओं को वेद पढ़ने, देश को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के महान उद्देश्य से आर्य समाज की स्थापना की। अपने लक्ष्य की लौ को उन्होंने कभी भी मंद नहीं होने दिया। परिणामस्वरूप आजादी के संग्राम में 75 से 80 प्रतिशत भूमिका आर्य समाज के वीरों की रही।

आज स्थिति विपरीत प्रतीत होती है। आर्य समाज केवल अपने मंदिरों के परिसरों तक सीमित रह गया है। निसंदेह हम प्रतिदिन यज्ञ कर लेते हैं और वह भी केवल अपने मंदिर के प्रांगण में जिसमें वे ही गिने चुने 10 या 15 व्यक्ति होते हैं वे भी अधिकतर 50 या 50 की उम्र के या इससे ऊपर के। हमारे निकट कहीं भागवत या अन्य किसी कथा का आयोजन हो तो हजारों से भी अधिक संख्या में लोग दिखाई देते हैं। कारण क्या है? क्या कभी आर्य समाज ने इस ओर ध्यान दिया है। दिन प्रतिदिन पाखण्ड का पहले से भी अधिक बोलबाला है। अभी कुछ दिन पूर्व कांवड़ की भीड़। अब पित्र पक्ष जिसमें श्राद्ध का अंधविश्वास। अभी पीछे जब अंतरास्ट्रीय आर्य समाज का सम्मेलन हुआ था जिसमें बाहर के लगभग 30 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था पहले ही दिन स्वामी रामदेवजी ने कहा था आर्य समाज को बाहर निकल कर काम करना होगा। केवल किसी का घर बैठे खंडन करते रहने से पाखण्ड या अंध विश्वास समाप्त होने वाला नहीं है। विडम्बना है कि आर्य समाज के पास अब दो-चार प्रचारक या उपदेशक ही नजर आते हैं। कु. अंजली आर्या तथा दूसरे एक मुनि शैलेष सत्यार्थी। प्रसंगवश उल्लेखनीय है कि ब्रह्मकुमारिओं के मुख्यालय आबू रोड पर मुनि जी के 10,000 ब्रह्मकुमारिओं के बीच दिए गए प्रवचन को सुनकर सैकड़ों अनुयायी यह कहते सुने गए कि वस्तुत: परमात्मा, परमेश्वर अथवा परमसत्ता की व्याख्या जो मुनि जी ने की वह ही सटीक प्रमाणित है और उन्होंने आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण करने का वचन दिया। ब्रह्मकुमारिओं के अनुसार परमात्मा न तो सर्वत्र विराजमान है और न ही वह यहां रहता है उसका स्थान तो ऊपर हैं किंतु वेदों के प्रमाण देते हुए बिना अपने जीवन की परवाह किये मुनि शैलेष सत्यार्थी ने उनकी समस्त धारणाओं का खंडन कर परमेश्वर के वास्तविक एवं श्रेष्ठतम नाम ओ३म् और उसके स्वरूप का बोध कराया। यही शैली कु. अंजलि आर्या की है।

चारों ओर दुराचार, वैमनस्यता तथा अराजकता का बोल बाला था और इन सबका केवल और केवल कारण था कुरीतियों पर चलना जिसकी सत्ता उनके समय में आर्य समाज के प्रचार एवं प्रसार में अनेक विद्वानों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा जन-जन तक वेदों की ऋचाओं को फैलाया। मानो सारा राष्ट्र वेदमय हो गया था।

इस प्रकार जब आर्य समाज के विद्वान प्रचारक या उपदेशक के रूप में आर्य समाज मंदिरों के प्रांगण से बाहर निकल कर कथा वाचकों की भांति अपने प्रवचनों से लोगों में वास्तविक ज्ञान की शिक्षा देगें, वेद के अनुसार पाखण्ड एवं कुरीतियों से दूर रह कर अपना जीवन सुंदर और सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा देंगे तो अवश्य वे वेद मार्ग पर चलने का प्रयास करेंगे। अत: आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक आर्य समाज का सदस्य मंदिर से बाहर निकले और लोगों को इन कुरीतियों पर न चल कर पाखण्ड से दूर रहने की सलाह दे। तभी हम ऋषिवर के लक्ष्य की प्राप्ति में सहयोगी बन सकते हैं।

!! इति ओ३म् !! OO

समाचार - सूचनाएं

- 2 अक्टूबर महात्मा गांधी और लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती बड़े ही धूमधाम से मनायी गई।
- 8 अक्टूबर विजयदशमी पर्व धूमधाम से मनाया गया।
- 11 अक्टूबर गुरु विरजानंद स्मृति दिवस मनाया गया।
- 15 अक्टूबर नारायण स्वामी स्मृति दिवस मनाया गया।
- 24 अक्टूबर आनंद स्वामी स्मृति दिवस मनाया गया।
- 27 अक्टूबर स्वामी दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस मनाया गया।
- 26 अक्टूबर को 136वां महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस का भव्य आयोजन रामलीला मैदान में किया गया। जिसमें अनेक आर्य समाजों के प्रतिनिधियों द्वारा भाग लेकर महर्षि के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किये गये।
- 28 अक्टूबर को केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में भजन संध्या का आयोजन पीतमपुरा दिल्ली में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के अवसर पर किया गया।

आगामी कार्यक्रम :

- 14 नवम्बर महात्मा हंसराज स्मृति दिवस और आज ही के दिन जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिन 'बाल दिवस' के रूप में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।
- 17 नवम्बर लाला लाजपत राय बलिदान दिवस।
- 24 नवम्बर जगदीश चंद्र बसु स्मृति दिवस।
- 11 से 15 दिसम्बर को आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा का भव्य वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अनेक आर्य नेताओं, संन्यासियों, विद्वानों, भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया गया है। आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं।

आर्य नेता डॉ. सत्यपाल सिंह सांसद को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का कुलाधिपति बनाए जाने पर आर्यजगत, आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा के समस्त अधिकारियों, सदस्यों, आचार्यों, ब्रह्मचारियों की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं!!

सूचना : आदरणीय सदस्यों से निवेदन है कि आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'विश्ववारा संस्कृति' मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका निरंतर प्रकाशित हो रही है और आप तक समय पर पहुंच रही है। आपने सदस्यता ग्रहण करके वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु जो सहयोग प्रदान किया तदर्थ धन्यवाद! कुछ सदस्यों का मासिक सदस्यता शुल्क जनवरी 2019 को समाप्त हो रहा है फिर भी पत्रिका निरंतर प्रेषित की जा रही है। अधिक समय तक शुल्क न मिलने पर पत्रिका का प्रेषण करना संभव नहीं हो पाएगा। अतः आपसे निवेदन है कि अपना शुल्क भेजकर सहयोग प्रदान करें।
चैक/मनीआर्डर 'आर्यसमाज' के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010100282, IFSC- UTB10SCN560 में जमा करा कर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें।

- **प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा (उ.प्र.) मोबाइल : 9871798221, 7011279734**

विनम्र श्रद्धांजलि

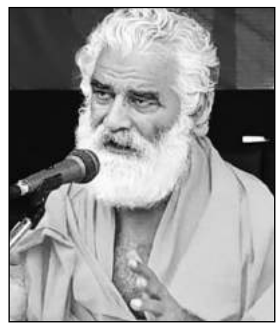

आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासी, अनेक शिष्यों के जीवन निर्माता, गुरुकुल महाविद्यालय पूठ के संस्थापक-संचालक, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के यशस्वी महामंत्री, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सर्वात्मना समर्पित श्रद्धेय स्वामी धर्मेश्वरानंद सरस्वती जी हृदयाघात के कारण अब हमारे बीच में नहीं रहे। आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थ आश्रम नोएडा द्वारा विनम्र श्रद्धांजलि!!

- प्रबंध सम्पादक

समस्त विश्व के मनुष्यों से मानवता की अपील

मुर्दे को छूने पर तो नहाते हो,
मुर्दा लाशों को खा जाते हो।

हे मांसाहारियों! तुम अपने बच्चे की जीवन रक्षा हेतु (बीमारी की अवस्था) में अंन्तिम श्वास तक डॉक्टरों के पास दौड़े-दौड़े फिरते हो, रुपयों को पानी की तरह बहा देते हो। पागल होकर लाश में भी जीवन डलवाने के प्रयत्न में लाखों रुपये खर्च कर देते हो। परंतु माता-पिता को टकटकी बांधकर देखते हुए उनके सामने उनके बेजुबान गरीब असहाय, बकरी, मुर्गी, सुअर आदि के बच्चों की गर्दन तोड़ व मछलियों को काटकर उनकी जीवन लीला समाप्त कर मजे से मुर्दा लाशें खाकर अपने पेट को कब्रिस्तान बनाते हो, क्या यही मानवता है? क्या यही तेरा इंसाफ है? क्या निरपराध को मारना जायज है? क्या हम पशु पक्षियों को जीने का अधिकार नहीं है? आखिर ये सब पाप कर्म किसलिए? कवि के शब्दों में-

जाएगा यहां से जब कुछ भी साथ ना होगा,
दो गज कफन का टूकड़ा तेरा लिबास होगा।

यदि एक मानव किसी दूसरे मानव की हत्या करे तो उस पर दफा 302 का मुकद्दमा चलता है। और उसे मौत की सजा होती है, पर वही व्यक्ति किसी पशु का वध करे तो उसे कोई सजा नहीं होती। यह कैसा इंसाफ? प्रभु की सृष्टि में सबको जीने का अधिकार है, जब तुम किसी को प्राण दे नहीं सकते तो किसी के प्राण लेने का अधिकार तुम्हें किसने दिया? सच है प्राणियों की पुकार कि-संसार में मानव तो एक सर्वोत्कृष्ट प्राणी है और हम पशु ठहरे- तुच्छ। मानव ने सभी कायदे कानून अपने ही स्वार्थ के लिए बनाए हैं। उसने हम बेजुबानों, गरीबों, असहायों पर सदैव महाभंयकर अत्याचार ही किये हैं और आगे भी करता रहेगा। पर याद रख यह निर्दयी मानव! एक दिन हमारी आहें और यह ऊंच-नीच का भेदभाव, भविष्य में एक दिन समस्त मानव जाति के विनाश का कारण बनेगी। क्योंकि खून से सींचा हुआ पौधा कभी हरा नहीं हो सकता है। कवि के शब्दों में-

जुल्म की टहनी कभी फलती नहीं,
नाव कागज की कभी चलती नहीं।

मांसाहारियों की दलील : यदि हम इन जीव जंतुओं को नहीं खाएंगे तो ये बढ़ जाएंगे।

उत्तर- ऐसा नहीं है क्योंकि छिपकली, गधा, घोड़ा, खच्चर, शेर, चीता, दरियाई घोड़ा, हाथी, कुत्ता, बिल्ली, कौवा, उल्लू व गिद्ध आदि अनेक ऐसे प्राणी हैं जिनका मांस कोई नहीं खाता फिर भी ये तो नहीं बढ़ते। बढ़ता तो वही है जिसका पालन-पोषण किया जाता है।

पेट भर सकती हैं तेरा, जब दो रोटियां,
फिर क्यों खाता है, तू बन्दे बेजुबां की बोटियां।

➲ गंगा शरण आर्य

■■■

महर्षि दयानन्द और दीपावली........ (पेज 13 का शेष)

ऋषि दयानन्द हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए किले की दीवार बनकर खड़े हो गए, उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से हिन्दू धर्म का परिष्कृत, प्रेरक, व्यवहारिक तथा वैज्ञानिक स्वरूप संसार के सामने रखा, आर्य समाज के कार्यों की सबने सराहना की है। आर्य समाज के सिद्धांत, विचार, आदर्श तथा मान्यताएं सच्चे अर्थ में जीवन और जगत को सीधा, सच्चा एवं सरल मार्ग दिखा सकती हैं। परम्परागत प्रतिवर्ष दीपावली आती है, लोग मिलते हैं, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्तव्य पूरा समझ लेते है। जलसा, जुलूस, लंगर, फोटो, माला, भाषण आदि तक कार्यक्रम सीमित रह जाते हैं। महापुरुषों की जयंतियां, पर्व, स्मृति दिवस आदि हमें जगाने, संभालने व आत्मचिन्तन के लिए आते है। जिन उद्देश्यों, आदर्शों तथा सिद्धान्तों के लिए संस्था, संगठन व आर्य समाज बना था उस दिशा में चिंतन करना चाहिए। क्या खोया? क्या पाया? कहां के लिए चले थे? किधर जा रहे हैं, विवादों तथा स्वार्थों को छोड़ों, परस्पर मिलो, बैठो, सोंचो आर्य विचारधारा को कैसे आगे बढ़ायें-'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' का उद्देश्य कैसे प्राप्त करें, संसार में तेजी से फैल रहें ढोंग, पाखंड, गुरुडम आदि को कैसे हटाया जाए? दीपावली अंतस में फैल रहे अंधकार को हटाने और मिटाने का संदेश लेकर आती है। दीवाली ऋषि दयानन्द को स्मरण करने का पर्व है, जो ऋषिवर ने सत्य सनातन वैदिक धर्म का मार्ग दिखाया था उससे हम भटक तो नहीं गए? जिन उद्देश्यों के लिए ऋषि ने आर्यसमाज बनाया था, उन सिद्धान्तों और विचारों के चिंतन की प्रेरणा देता है- ऋषि निर्वाणोत्सव जो हाल ही में मनाया गया है। आर्यों उठो! जागो! अपने स्वरूप, कर्तव्य तथा दायित्व को समझो तभी हम ऋषि को सच्चे अर्थ में श्रद्धांजलि देने के हकदार हैं। ओ३म्!!

रोगों से बचना है तो खान-पान में बरतें सावधानी

- चिकित्सकों ने चिंताएं प्रकट कीं मधुमेह के कारण गुर्दा रोगियों की बढ़ती संख्या के मद्देनजर इस रोग के विशेषज्ञों की चिंताएं भी बढ़ी हैं। इसको लेकर दिल्ली सहित कई जगहों पर सेमिनार आयोजित हो चुके हैं। इनमें देश-विदेश के डाक्टरों ने विचार विमर्श किया और चिंताएं प्रकट करते हुए समाज में जागरूकता बढ़ाने पर बल दिया है।
- चिकित्सकों और विशेषज्ञों का मानना है कि अगर मोटा अनाज का प्रयोग हम पहले की तरह करने लगें तो पेट की ज्यादातर बीमारियों से छुटकारा मिल सकता है। जैसे मोटे अनाज में जहां प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है, वहीं इससे हाजमा भी दुरुस्त रहता है। इनमें चना, मटर, मक्का, जौ, सोयाबीन, ज्वार, बाजरा आदि प्रमुख हैं।

स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न सिर्फ जीवन को खतरे में डाल रही है बल्कि परिवार और समाज को भी कहीं न कहीं पीछे छूट जा रहा है। इसका कारण भौतिकवादी युग में पैसा कमाने की धुन है। इस धुन के चलते दिनचर्या के अनियमित होती जा रही। इसका परिणाम हार्ट अटैक, बल्ड प्रेशर, मधुमेह, पीलिया, नींद का पूरा न होना और गुर्दा रोगियों की तादाद बढ़ रही है। साथ ही खान-पान में अनियमित्ता और संतुलित आहार की कमी के कारण अन्य कई बीमारियां पैदा होती हैं। सरकारी स्तर पर मधुमेह, गुर्दा व पीलिया आदि रोगों के खिलाफ अभियान के तौर पर प्रयास किये जा रहे हैं, लेकिन सब कुछ सरकार ही कर देगी ऐसा भी मुमकिन नहीं है।

समाज में जागरूकता बढ़ा कर ही लोगों में स्वास्थ्य के प्रति सजग किया जा सकता है। मधुमेह ऐसा रोग है जो ब्लड प्रेशर, गुर्दा रोग, हार्ट डिजीज को जन्म देने का अहम कारण बनती है। खानऱ्पान में पूरी तरह एहतियात बरत कर मधुमेह और अन्य बीमारियों पर काबू पाया जा सकता है। शुगर बढ़ने से गुर्दा फेल होने के मामलों में हाल के दिनों में काफी इजाफा हुआ है। सरकार ने मधुमेह से लड़ने के लिए आयुर्वेद को प्रोत्साहित करने का बीड़ा उठाया है। आयुर्वेद के जरिए जटिल बीमारियों से लड़ा जा सके सरकार ने आयुष मंत्रालय भी अलग बनाया है। जो आयुर्वेद औषधियों के अनुसंधान पर बल दे रहा है और ऐसा करने वाली निजी क्षेत्र की कंपनियों को भी सरकार वित्तीय और वैज्ञानिक मदद कर रही है। पिछले दिनों इसका फायदा भी देखने को मिला। आयुर्वेद क्षेत्र में भी शुगरनाशक और गुर्दा रोगों के उपचार के लिए कई दवाएं सामने आई हैं। इनमें लखनऊ स्थित सीएसआईआर द्वारा शोध पर आधारित एमिल फार्मास्यूटिकल शुगर रोगियों के लिए बीजीआर34 और किडनी रोगियों के लिए नीरी और नीरी केएफटी वगैरा चिकित्सकों की पसंद बन रही हैं।

खान-पान में असावधानी रोगों देती है जन्म : विशेषज्ञों की राय है कि जागरूकता की कमी और खान-पान में असावधानी के कारण होने वाली अनेक बीमारियों में गुर्दा संबंधी बीमारियां मुख्य रूप से सामने आई हैं। गुर्दे में पथरी की समस्या आम हो गई है। यही नहीं गुर्दे फेल होने के केस भी बढ़ रहे हैं। पिताशय में पथरी की समस्या इसी का परिणाम है। गत दिनों एक बातचीत में आयुर्वेद दवा निर्माता कंपनी एमिल के कार्यकारी निदेशक संचित शर्मा ने दावा किया कि उनकी कंपनी ने डायलिसिस कराने को मजबूर रोगियों को राहत देने के लिए जो नीरी केएफटी नामक टॉनिक तैयार किया है उसमें वे सारे तत्व मौजूद हैं जो मरीज में रोग से लड़ने की क्षमता बढ़ाते हैं। इसमें शामिल की गईं बूटियों में एक बूटी पुनर्वा है जो खराब कोशिकाओं को पुनर्जीवित करती है। उन्होंने बताया कि शुगर को काबू में रखने के लिए सीएसआईआर द्वारा खोजे गए फार्मूले पर उनकी कंपनी द्वारा बाजार में लाई गई बीजीआर34 के भी अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं।